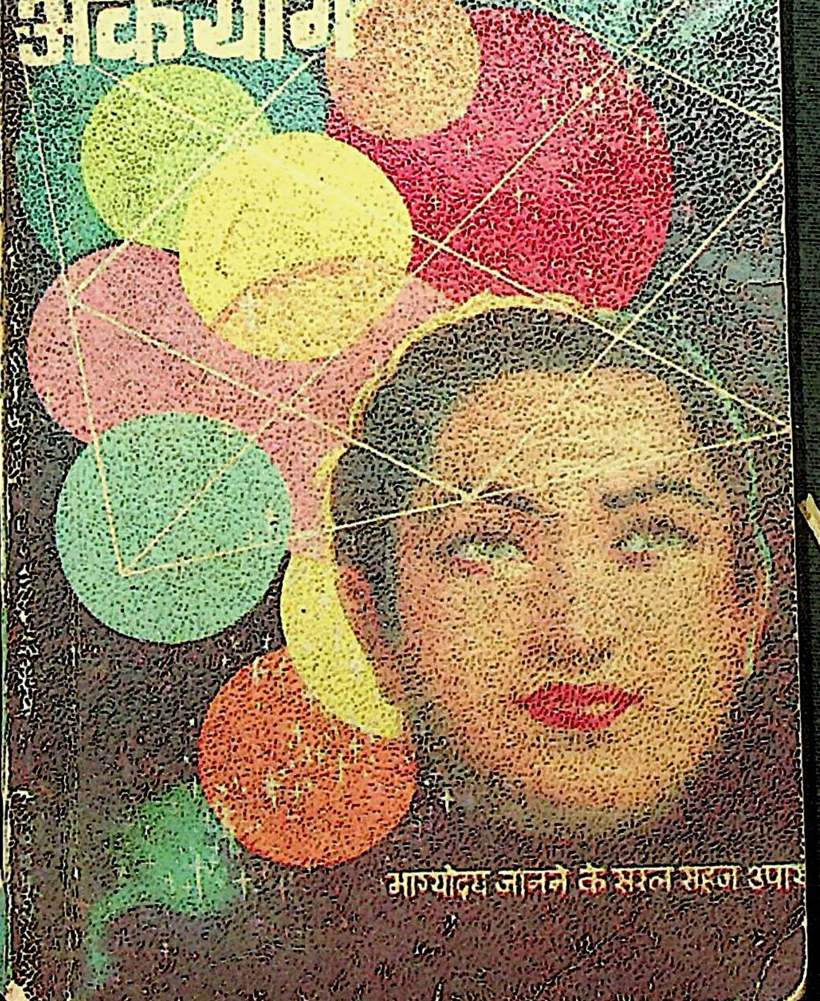
ज्योतिषाचार्य उमेशशर्मा [illegible]

भारतीय ज्योतिष और अंकयोग



भाग्योदय जानने के सरल सहज उपाय

भारतीय ज्योतिष और अंक योग

ज्योतिषाचार्य उमेश शास्त्री

भाग्य की लीला बड़ी विचित्र है। मगर कर्म के बिना भाग्य अपंग हो जाता है! अगर आपको भाग्योदय और भाग्य नेष्ट के समय ज्ञात हो सकें तो आप भाग्योदय का पूरा-पूरा लाभ उठा सकेंगे और नेष्ठ समय से अपने को बचा सकेंगे। आपको किन लोगों को मित्र बनाना चाहिये और किन से बचना चाहिये यह जानकारी आपको जीवन के हर क्षेत्र में लाभकारी रह सकती है और आप भाग्य सिद्धि के काफी निकट पहुंच सकते हैं।

☐

इस पुस्तक में अंक ज्योतिष के माध्यम से देश के प्रमुख निर्लांत उमेश शर्मा ने भाग्य सिद्धि के विषय में प्रकाश डाला है। उन्होंने वायदा किया है कि यथा शक्ति वो पाठकों को उचित परामर्श भी देंगे। आप चाहें तो उन्हें इसी पते पर पत्र लिख सकते हैं :—

भारतीय वैदिक धर्म प्रचार परिषद
श्री उमेश शर्मा, वेदाचार्य
गली शकरकंद, वाराणसी (उ० प्र०)
प्रधान मन्त्री

प्रकाशक

अनिल पाकेट बुक्स,

ईश्वरीपुरी, मेरठ शहर

मूल्य तीन रुपये

मुद्रक

अनुराग प्रिन्टर्स, छीपीवाड़ा मेरठ–२

भारतीय ज्योतिष और अंक योग—[ज्योतिषाचार्य, रमेश शर्मा वेदा चार्य]

अभिमन्यु पुस्तकालय
को
समर्पित

कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन

□

गीता के इस महान् संदेश
के साथ अपना
लेखन जीवन
प्रारम्भ
करते हुए
यह कृति
उन सभी
को
सादर
समर्पित है
जो
कर्म में
विश्वास करके
प्रभु आराधना
में
विश्वास करते हैं।

विषय सूची

प्रथम खण्ड (आरम्भ विवेचन खण्ड)

दूसरा खण्ड (फलित योग)

प्रवेश समस्या [illegible]

संस्कृत का एक पद है : टका धर्म, टका धर्म, टका ही परम प्रभु—यस्ये गृहे टका नास्ति, हा टका. हा टका टकटकायते ।

ठोस समस्या है टके की । टका अर्थात् धन । वैभव । सम्पदा और सारी दौड़ धूप, सुबह से शाम तक की सारी कार्यवाही उन सिक्कों के लिये समर्पित रहती है जिससे खरीदा जाता है भोजन वस्त्र, सुविधायें, नौकर चाकर, यश प्रतिष्ठा और धार्मिक अनुष्ठान ही । अर्थात भाग्य सिद्धि का सीधा साधा अर्थ है धन, टका, रुपया, डालर, रूबल, दीनार ।

और यह टका, जिसे कभी कोड़ियों, अशर्फी का रूप मिला था और कभी नोटों का माध्यम—हमेशा मनुष्य भाग्य के आकर्षण के रूप में उसका भाग्य विधाता बन बैठा है । मगर वास्तव में भाग्य सिद्धि धन नहीं है । धन लाभ के विषय में तो यहउक्ति ही ठीक :

सुत दारा और लक्ष्मी पापी के भी होय ।
संत समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ होय ॥

और भाग्य सिद्धि केवल धन में नहीं है । धन पर मंडराने वाले सांप भाग्यशाली नहीं कहे जा सकते । और ना ही वे भाग्यशाली होते हैं । अतः धन जुटाना धन का वास्तविक उपभोग और भाग्यशाली जीवन के उक्त प्रमुख अंग हैं:—

—स्वस्थ शरीर ।

—धन सम्पदा ।

—अपार वैभव ।

—सन्तान सुख ।

—पत्नि सुख ।

—सामाजिक सम्मान ।

—आपसी स्नेह ।

और इसको प्राप्त करने के लिये वांछनीय है कठोर श्रम, अपार मेहनत और निरन्तर विवेक के साथ चाहिये ऐसी बुद्धि जो सुख दुख में एक रहकर भीं जीत सके :

—भाग्य कहां है ।

—भाग्य कैसे प्राप्त होगा ।

—भाग्य किससे प्राप्त होगा ।

—उस भाग्य को कैसा भोगा जा सकता है ।

संसार का एक नियम है कहा जाता है कि मनुष्यमात्र चोरासी लाखयोनियों में से गुजर कर मनुष्य बनता है और संसार के भोग भोगकर परम धाम को जाता है । जिसकी इच्छायें अधूरी रहती है, वह पुनः पुनः इस संसार में लौटते हैं तो परलोक सुधारने के लिये इस लोक को सुधारिये । आत्मतुष्टी और संसार के सुख-दुख से छुटकारा पाने के लिये वैभव भोगिये ।

विवेकी व्यक्ति वही होता है जो अपनी बुद्धि से संसार को परखे और शास्त्रों के नेत्र ज्योतिष शास्त्रों के निर्देश अनुसार अपना भाग्य बनाये ।

वीर होने के लिये बलशाली और साहसी ही नहीं चतुर भी होना होता है और उस मार्ग को पकड़ना चाहिये जिससे वीर भोग्य वसुन्धरा की उक्ति सार्थक होती है ।

....

भाग्य सिद्धि और धन लाभ

आज स्वतन्त्र भारत में हर व्यक्ति को यह सुविधा प्राप्त है कि वह अपने बल बुद्धि विधा पराक्रम से भाग्य सिद्धि कर सके। भाग्य सिद्धि का सीधा साधा अर्थ है धन लाभ। धन लाभ के यूं तो ढ़ेरो साधन है, मगर आमतौर से धन बुद्धि, उत्तराधिकार और भाग्य से मिलती है और उसके लिये कुछ उपाय विधी करनी पड़ती है। भाग्य सिद्धि और धन लाभ किस व्यक्ति को होंगा, कोन उसे भोगेगा उसका ज्योतिष शास्त्र में विषद वर्णन है। ज्योतिष शास्त्र धन के भोग उस व्यक्ति को प्राप्त होंगे, जिसकी कुण्डली में निम्न विशेषतायें हैं:—

१) पांचवे स्थान पर चन्द्रमा शुक्र की दृष्टि से पूर्ण हो। लग्न घर भाव में स्थित हो अथवा धनेश आठवें भाग में हो या ग्यारवे और दूसरे स्थान के इष्ट चौथे स्थान पर हों तो उस व्यक्ति को अकस्मात लाभ होता है, जैसे लाटरी, सट्टा, गड़ा धन आदि इस प्रकार ससुराल से धन प्राप्ति के भी कुछ योग ज्योतिष शास्त्र में दिये गये हैं साथ ही धन सुख मिलेगा या नहीं इसका भी महत्व पूर्ण योग दिया हुआ है। मगर सबसे बड़ी बात तो यह है कि कुण्डली विज्ञान एक जटिल विज्ञान है और क्योंकि पैदा होने के समय में जरा भी गड़बड़ हो तो ग्रह दशा में परिवर्तन हो जाता है इसलिये बिरले व्यक्ति ही कुण्डली से लाभ उठा सकते हैं फिर केवल भाग्य के अनुसार या भाग्यष्ठा धन भोग नहीं मिलता। कुछ अन्य सुयोग भी होते हैं और उनके अनुसार धन की सुयोगयता पर, उपलब्धि पर उसके भोग पर अधिक प्रकाश डाला जा

सकता है। धन जुटाने के बाद भी कुछ लोग उसका उपभोग नहीं कर पाते, और बगैर धन पाये ही धनी जैसा सुन्दर जीवन बिताते हैं। इसलिये इस विषय में जिस नये सिद्धांत का प्रतिपादन हुआ है वह है कर्म से धन सिद्धि। वीर भोग्या वसुन्धरा का सिद्धान्त भी इसी दर्शन का प्रतीक है कि कुछ करो और कुछ प्राप्त करो। यह सच है कि बगैर भाग्य में हुए कुछ नहीं मिलता मगर इसके बावजूद केवल भाग्य मात्र से ही तो कार्य नहीं चलता भाग्य में कुछ पाने के लिये कुछ नही, बहुत कुछ करना पड़ता है। और इसमें युक्त गुण इस प्रकार है :—

—विवेक।

—पौरुष।

—आत्मबल।

—शुद्ध भावना।

आपने यह पद तो सुना ही होगा : धन चाहे तो दानकर, मोक्ष चाहे तो भक्ति। यह भी कहा जाता है कि देने से, दान करने से धन बढ़ता है। फिर भाग्य सिद्धि का तो अर्थ ही यह है मनुष्य अपने भाग्य सिद्धि के लिये प्रयासक है। भाग्य वृद्धि अनायास ही नहीं होती। उसके लिये विधि विधान की आवश्यकता होती है और आत्मबल, पौरूप विवेक तथा शुद्ध भावना को विवेक की गंगा में स्नान कराके मनुष्य यह जान सकता है कि उसका कौन सा कदम गलत है और कौन सा सही। उसे किनसे मिलने से प्रसन्नता होगी और किनसे नहीं, तो कौन से उनके साथी होंगे, सहायक होंगे, और कौन मार्ग में पीड़ा पहुंचाने वाले तथा और कौन से काम में उन्हें हानि उठानी पड़ेगी और कौन से काम में लाभ तो उसे भाग्यसिद्धि के निकट पहुँचने में जरा देर नहीं लगती थोड़े से प्रयास से ही भाग्य सिद्धि और निकट आ जाती है। इस

पूरे व्यापार प्रसार में हमारा इष्ट विवेक ही क्योंकि एक पद है:—

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े किसके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दियो बताय ॥

उक्त आप पुस्तक पढ़े :

उमेश शर्मा वेदाचार्य

भाग्य सिद्धि के लिये अपने आपको पहचानिये

एक पद है—सदा न फूले तोरोई, सदा न सावन होय। अर्थात संसार में न तो हर समय धूप निकलती है न हर समय बारिश होती है। हर समय न तो दिन रहता। न गर्मी ही हर समय रहती है। और न सर्दी ही। इसके बावजूद ऋतुओं का आवागमन होता है साल का क्रम पूरा होते ही फूल खिलते हैं। बसन्त आती है, फिर गर्मी, बरसात, हेमन्त, शिशिर और शीत ऋतु का आगमन होता है। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन का क्रम चलता रहता है और कभी फूल मुस्कराने का मौसम यदि आता है तो फूल झड़ने का भी मौसम आता है।

इसी प्रकार जीवन में सुख दुख का क्रम चलता रहता है। कभी एक बार में ही सफलता मिल जाती है और कभी सफलता प्रयास करते २ भी कोसों दूर जा बैठती है।

इस व्यवस्था को ही कहा जाता है समय। यह समझा जाता है कि हर वस्तु का समय निश्चित हो जाता है और मनुष्य के जीवन में जो घटनायें घटती हैं उनकी एक वैज्ञानिक व्यवस्था

और धारक इस प्रकार कही जाती है कि कोई भी चट्टान उस वक्त तक नहीं टूटती जब तक उस पर अपेक्षित चोट न पड़ जाये थोड़ा सा ताप कम रहने पर आलू पक नहीं सकता। और योगिक परिवर्तन तो आमतौर से थोड़ी सी कमी के कारण उस स्थिति को नहीं पा सकते जो अपेक्षित होती है। अतः आमतौर सांसारिक सफलता के लिये तीन बातों की उपेक्षा की जाती है:—

○ अनुकूल समय।

○ अनुकूल कार्य।

○ अनुकूल पात्र।

इस बात को विचारने के लिये मनुष्य न जाने कितने समय से कितने प्रयास करता आ रहा है। वहुत समय पूर्व ही हमारे कवि पूर्वजों ने 'उनके ज्योतिष' के रूप में ऐसा सरल और सहज ज्ञान इस संसार को प्रस्तुत किया था जिससे साधारण जोड़ घटा करके फलित इष्ट निकाल लिया जाता है। और वह पूरा ही उतरता है।

अंक ज्योतिष एक विज्ञान के रूप में मनन करने वाला व्यक्ति सरलता से भूत भविष्य और वर्तमान का पता लगाकर उस भाग्य सिद्धि को खोज सकता है जो किसी को सफलता के कगार पर ले आये आप जानते हैं कि यूं तो अंक संरक्षण संख्याहीन ही है, इसके बावजूद वास्तवविक अंक केवल नौ है। शून्य उनके महत्व को अनन्त कर देता है और आप जिनके पास समय कम है साधारण जोड़ घटा करके उपयुक्त समय. उपयुक्त व्यक्ति से मिलने का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

जरा सोचिये तो।

एक परिवार जीवन भर तक प्रसन्नता से पति पत्नी द्वारा संचालित होता रहता है।

दो दोस्त जीवन भर दोस्त रहते है ।
मगर दो भाइयों में जरा नहीं बनती ।
जरा सी दुश्मनी कत्ल करवा देती है ।
ऐसा क्यों होता है ।

इसका जवाब है कि संसार की हर वस्तु से मनुष्य का सम्बन्ध है । मनुष्य जिन भूल पच तत्वों का पुतला है उनकी नाकामयाबी है : पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, और आकाश । लेकिन पृथ्वी अकेली नहीं है वह जिस सारे मंडल की एक सदस्या है । उनका प्रमुख सदस्य है सूर्य, और सूर्य के अलावा अन्य ग्रह हैं:—

१. चन्द्रमा ।
२. मगल !
३. वुद्ध ।
४. वृहष्पत्ति ।
५. शुक्र ।
६, शनि
७. राहू ।
८. केतू ।
९. वरूण ।
१०वारुणी ।

इनका हरेक का पृथ्वी पर रहने वाले जीवों पर प्रभाव पड़ता है और उनमें अंकों का विशिष्ट महत्व है । यही कारण है कि सर ग्रह की जप संख्या में कुछ न कुछ अन्तर है, और फिर शब्द संख्या पर बल है जैसे कभी मंत्र २४ शब्दों का बनता है कभी ३२ का और कभी ६३ कां इसी प्रकार जप संख्या की भी विविधता है जैसे :—

सूर्य : सात हजार ।

चन्द्रमा : ग्यारह हजार ।

मंगल : दस हजार ।

बुद्ध : नौ हजार ।

वृहस्पति : उन्नीस हजार ।

शुक्र : सौलह हजार ।

शनि : तेइस हजार ।

राहू : अठारह हजार ।

केतू : सत्रह हजार ।

और एक सौ आठ संख्या का महत्व भी इसीलिये है कि पूरा खगोल ३६०° अंशों में विभाजित है जिसकी कलाये

बनती है और यदि एक अमल की मात्रा निकाली जाये तो वह स्पष्टतया दस हजार आठ सौ बनती हैं जिसे प्रतीक के रुप में १०८ मान लिया गया है ।

अंक ज्योतिष के माध्यम से हम उस साधन तक पहुंच सकते हैं जिससे हर दिन, हर समय और घण्टे तक का भविष्य जान लेते हैं । जैसा कि आप सभी जानते हैं कि 'इकाई के अंक, तो होते हैं और पूरी सृष्टि इसी में समाप्टि हो जाती है। और सभी संस्थाओं को मूल्याकाओं में परिवर्तित कर सकते हैं। इस विषय में सभी को जोड़कर भू लोक बनाये जाते हैं। और उनका विवेचन मूलांक का विवेचन माना जाता है मूलांक है ।

१ = १

२ = २

३ = ३

४ = ४

५ = ५

६ = ६

७ = ७

८=८

९=९

१०=१+०=१

११=१+१=२

१२=१+२=३

१३=१+३=४

१४=१+४=५

१५=१+५=६

१६=१+६=७

१७=१+७=८

१८=१+८=९

१९=१+९=१०   =१+०=१

२०=२+०=२

२१=२+१=३

२२=२+२=४

२३=२+३=५

२४=२+४=६

२५=२+५=७

२८=२+८=२+८=१०=१+०=!

२९=२+६=११=१+११=२

३०=३+०=३

३१=३+१=४

उपरोक्त ३१ अंक इसलिये लिखे गये हैं कि मनुष्य अधिक से अधिक ३१ तारीख में उत्पन्न हो सकता है। यूं जायानी पधति के अनुसार हर दिन, हर तारीख का अलग महत्व होता है और उसी से उसका फल जाना जाता है अगर भारतीय पद्यति के अनुसार हर ग्रह और हर दिन का एक मूलांक होता है; जो इस प्रकार बतलाया गया है :—

ग्रह मूलांक

सूर्य : १

चन्द्रमा = २

मंगल = ६

बुद्ध = ५

वृहस्पति = ३

शुक्र = ६

वारूण = ०

शनि = ८

मंगल = ६.

इसी प्रकार दिनों के भी स्पष्ट अंक इस प्रकार हैं :—

शनिवार : १;४

सोमवार : २,७

मंगलवार : ६

बुद्धवार : ५

वृहस्पतिवार—३

शुक्रवार—६

शनिवार—८

इस प्रकार मूलांक ज्ञात होने से आपको रोजगार, साझेदारी, व्यवसाय का भी पता लग जायेगा : आमतौर से एक भूलांक के व्यक्तियों के व्यवसाय अन्य लोगों के उन व्यवसायों से भिन्न होते हैं। जिनके भूलांक भिन्न हों ! आमतौर से नाम अंग्रेजी में लिख कर नाम के क्रमांक भी मालूम कर लिये जाते हैं और यदि जन्म और नाम के भूलांक में अन्तर हो तो उसे एकाध अक्षर घटा बढ़ा कर सही कर लिया जाता है; जैसे नामों के अक्षर से अंक है :—

ए = १	एम = ४
बी = २	एन = ५
सी = ३	ओ = ६
डी = ४	पी = ७
ई = ५	क्यू = ८
एफ = ६	आर = ९
जी = ७	एस = १
एच = ८	टी = २
आई = ९	यू = ३
जे = १	वी = ४
के = २	डबल्यू = ५
एल = ३	एक्स = ६
	वाई = ७
	जेड = ८

अब मान लीजिये आपका नाम है :—

अनुराग शर्मा

१ ५ ३ ९ १ १   १ ८ १ ९ ४ १

२०   २४

२ : ६

—योग : ८.

और यदि इस व्यक्ति का जन्म दिन है :

तीस सितम्बर उन्नीस सौ पैंसठ

३० : ९ : १९६५

३ : ९ : २१

३ : ९ : ३

१५

६.

अंक ज्योतिष वास्तव में अंकों का स्पष्ट फलित आचरण है। अनुभव से यह बात स्पष्ट हुआ है कि सभी लोग नौ प्रकार की श्रेणियों में बंट सकते हैं? मान लो किसी व्यक्ति का जन्म ७ मार्च १९३३ को हुआ तो उसका जन्मांक हुआ :

७. ३. १९३३
७. ३. १६
७. ३. ७
१७
८

और यदि यही ७ मार्च १९३५ होता तो उसका अंक होता :

७. ३. १९३५
७. ३. १
२८
१.

और यदि इसका अंक भी अर्थात् नाम का अंक भी एक है तो यह धारक अपने नाम के अनुरूप खूब तरक्की करेगा और यह सामजंस्य उसके जीवन में अपार प्रशंसा लाने का अंक एक ही होगा। एक कुशल विद्वान के अनुसार संक्षेप में इन अंकों का प्रकार इस प्रकार है :—

अंक—१

कल्पना से ज्यादा साधारण ज्ञान। गम्भीर, अनवरत कार्य-कर्ता, और मौलिकता।

अंक—२

शांत मन। वचन बद्धता। अच्छी गहरी समझ। परम्परा-वादी। परिवर्तन विमुख। सौन्दर्य और कला का पोषक। मगर सदैव कंजूस।

अंक—३

सहज, आकर्षक, मिलनसार और शत्रुओं से प्यार करने वाले अर्थात् अजात शत्रु। मगर सरलता से मूर्ख न बनाये जाना। भावनाओं से परे। आपको कठोर साथी का चयन करना चाहिये।

अंक—४

उदार, वीर, वीरोचित। संघर्षशील सरलता से विचार न बदलने वाले मनस्वी।

अंक—५

कुशल नोजवान, विलासता प्रिय, जल्द गुस्सा करने वाले, मगर क्षण भंगु क्रोध के स्वामी। सहायक, सहायता के लिये तत्पर। मगर आमतोर से यशविमुख।

अंक—६

आत्म निर्भर। मगर निराशापूर्ण व्यक्तित्व और हर क्षण नया कदम।

अंक—७

- कलापूर्ण, आदर्शवादी, सफल व्यापारी, कल्पना शील और निरन्तर अस्थिर स्वभाव।

अंक—८

आठ का एक यह महत्वपूर्ण अंक है। खास तौर से उस स्थिति में जब कि यह एक शोर्य और परम्परा का अंक माना जाता है : पराक्रम का यह अंक अपने में अद्वितीय है।

इसी प्रकार आठ का प्रतिफल भी जानना चाहिये ! अब हम अंक की विशेषता, गुण, स्वभाव, उसके देवता का स्वरूप, जरा पूजा आदि का वर्णन करेंगे। उसके बाद आप स्वयं ही फैसला कर सकेंगे कि आप कौन से ग्रह के प्रतिरूप चल रहे हैं। कौन से

ग्रह की छाया आपके ऊपर पड़ रही है और कौन से रंग आपको माफिक आयेंगे।

संसार में भाग्य सिद्धि का चक्र आपके जीवन में तभी कृत संकल्प का वसन्त लेकर मुस्करा सकता है जब कि आप जान जायें कि कौन सा कार्य आपके जीवन में सुखद है और कौन सा दुखद। कौन सा कार्य आपके जीवन में यश की वर्षा कर सकता है और कौन सा कार्य आपके मुंह पर कालिख पोत सकता है। यह सब जानने के लिये आपको अंक ज्योतिष का ज्ञान होना आवश्यक है!

आकस्मिक लाभ का प्रतीक

प्रखर सूर्य का प्रतिनिधि अंक—१

सूर्य ग्रह के कारण १ अंक के धारक व्यक्ति निम्न श्रेष्ट गुणों का स्वामी माना जाता है—

☐ तेजस्वी, निर्णय लेने में चतुर, कार्य निष्ट, योजना वद्ध।

☐ परिश्रमी—कर्मठ, उद्योग शाली।

☐ स्वास्थ्य में क्षीण।

☐ परेशान रहने वाला।

☐ क्रोधी।

☐ नेतृत्व गुण सम्पन्न।

महत्वाकांक्षी, मित्रों से भरपूर—मगर शत्रुओं की भी कमी नहीं रहती है।

आमतौर जब उक्त समय होता है तो (१) अंक का धारक निम्न अवस्था का भोग करता है :—

☐ जननी तिमै सफलता—नेतृत्व गुण सम्पन्न होने के कारण राव योग तक हो सकता है।

□सहनशील, दुख सहने की अपार शक्ति होने के कारण यश दूर-दूर तक फैल जायेगा !

□विस्तृत परिचय क्षेत्र।

□विलक्षण लाभ सिद्धि।

□सक्षम शरीर और पुष्ट।

□अकेले ही संघर्ष करने की क्षमता।

इसीलिये अंक के महारथियों में निम्न विशिष्ट व्यक्तियों का नाम उल्लेखनीय है :

१ : विश्व विजेता सिकन्दर महान्।

२ : लता मंगेशकर—भारतीय फिल्म संगीत की एक क्षत्र राज्य करने वाली स्वर साम्राज्ञी।

३ : गीतकार : मजरूह सुल्तानपुरी।

४ : कथाकार : फिल्म निर्माता : राजेन्द्रसिंह वेदी !

५ : □ऐनीवेसन्ट।

□प्रसिद्ध सिनेतारिका : मीना कुमारी।

ऐसे व्यक्तियों में निम्न दुर्गुण हो सकते हैं:—

—निरकुंशता के कारण स्वछंद। मीना कुमारी का जीवन इस बात का प्रतीक रहा है कि उन्होंने अपने जीवन में किसी की दखलवाजी पसन्द नहीं थी। और इस कारण उन्होंने सदैव दुख उठाया, और यदि उनका जीवन सूर्य से प्रभावित न होता तो सम्भवतः इतना दुखद अन्त न होता।

—व्यर्थ का दिखावा भी गलत हो सकता है। सूर्य के धारक अंक के कारण धारक में महत्वाकांक्षा का अपार भंडार होता है जैसा कि सिकन्दर महान के जीवन में था, अतः वे अपार जोखिम उठाते, अन्ध विश्वास करने को प्रस्तुत रहते हैं, और इस कारण उन्हें निम्न होती है :—

○खतरा।

○परेशानी।

○धन हानि।

○अपयश।

○विश्वासघात।

○सैक्स के मामले में हमेशा अप्रसन्नता, अपयश, लांछन और अशक्ति के कारण अपार परेशानी का योग।

○स्वभाव में हंसमुख, प्रसन्नता मुख और हर कार्य में सक्षम रहने के कारण इनमें प्रभावशाली होने के अपार गुण होते हैं। और इसी कारण इन्हें कुछ अलग पदों पर भी अपनी आय कम करनी पड़ती है :—

—आतिथ्य।

—मित्र वर्ग।

○अपार महत्वाकांक्षी होने के कारण इस प्रकार के व्यक्तियों को अपार जोखिम उठानी पड़ती है और जब अशुभ समय आता है तो निम्न हानियां होती हैं :—

—अप व्यय।

—धन हानि।

—धोखा।

—विश्वास घात।

स्पष्ट मत, सौंदर्य रसिक और स्वभाव से निरंकुश होने के कारण इन्हें सैक्स के मामले में लांछित होना पड़ता है।

उग्र मस्तिष्क के कारण क्रोध की मात्रा निरन्तर बढ़ती श्रेणी और निम्न रोग संभावित होते रहते हैं :—

—हृदय रोग

—रक्त सम्बन्धी रोग

—नेत्र पीड़ा

प्रथम अंक के धारक व्यक्ति के अनुकूल समय के विषय में निम्न जानकारियां प्रस्तुत हैं।

अनुकूल दिवस

१. रविवार

२. सोमवार

विशेषतया उस समय जब उस दिन ये शुभ तिथियां पड़ती हों :—

१, १०, १६, २६।

शुभ अशुभ तिथियां

भार चक्र में आपकी विशिष्ट शुभ तिथियां हैं :—

१—१

२—४

३—१०

४—१३

५—१६

६—२२

७—२८

८—३१

अशुभ सावधान रहने योग्य तिथियां

१—७

२—१६

३—२५

अनुकूल समय

विशेष रूप से निम्न समय प्रबल होता है :—

२१ मार्च से २८ अप्रैल तक।

१० जुलाई से २० अगस्त ।

इस समय यश वृद्धि, उन्नति के साधन और अपार यश के मार्ग प्रशस्त होते हैं और महत्वकांक्षा के पूर्ण होने के कारण मन में अपार सन्तोष होता है ।

प्रतिकूल समय

ऐसा माना जाता है कि संसार में शुभ के पीछे अशुभ और रात के पीछे दिन सदैव ही लगे रहते हैं, इसलिये अनुकूल और प्रतिकूल समय के क्षण में '१' अंक के धारक व्यक्तियों का प्रतिकूल समय वह माना जाता है जब सूर्य निर्बल होता है । आशंका मंडल में सूर्य क्षीण होने का समय है :

—अक्टूबर माह ।

—नवम्बर माह ।

—दिसम्बर माह ।

आमतौर से इस समय में निम्न परेशानी होती हैं :—

स्वास्थ्य में गड़बड़ ।

अनुत्साह ।

धन हानि ।

अपयश ।

अतः अंक '१' के भाग्य सिद्धि के लिये संघर्षशील व्यक्तियों के लिये आवश्यक है कि वे :—

○ निर्बल समय में कोई काम नया शुरू न करें । विवाह, रोमांस, आदि के लिये अनुकूल समय ही खोजें और केवल उन लोगों से मित्रता करें, विवाह सम्पन्न करें जो '१' अंक के धारक हों अथवा निम्न तारीखों को पैदा हुये हों :—

१—१

२—१०

३—१६

४—२८

५—१० जुलाई से २० अगस्त तक के पैदा हुये व्यक्ति।

६—२२ मार्च से २८ अप्रैल तक पैदा हुये व्यक्ति इनके जीवन में अधिक सुखलाने में समर्थ होंगे।

अनुकूल शुभ रंग

१—पीला।

२—ताम्रवर्ण।

पीला रंग सूर्य की स्वर्णता से मिश्रित होना चाहिये। स्वर्ण वास्तव में सूर्य का प्रतिपोषक प्रतिनिधित्व करता है अतः आप अपने चुनाव के रंगों में 'गोल्डन' या ताम्र कोई अपने लिये रंग चुनिये, प्रयास कीजिये कि आपके पास इस रंग का कुछ न कुछ अवश्य होना चाहिये। आप यह रंग निम्न ढंग से प्रयुक्त कर सकते हैं:

- रुमाल।
- गोल्डन केप वाला पेन।
- विद्दावन।
- तकिये के गिलाफ।
- पर्दे।

इष्ट देव

'१' अंक के धारक इष्ट देवता सूर्य सब दुखों के निवारक और सर्वांग सिद्धि के उन्नायक हैं अतः निरंतर निम्न दिन चर्या का पालन करें:—

—माणिक जड़ी सोने की अंगूठी का प्रातः उठते ही दर्शन।

—सूर्योदय को नमन।

—प्रतिदिन १०८ बार निम्न मंत्र का पाठ करें:—

॥ ओं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ॥

रविवार सूर्य का वार होता है अतः उस दिन उपवास करें और एक वार ही वगैर नमक का भोजन करें।

भाग्य सिद्धी के लिये क्या करें ?

□ केवल अनुकूल समय ही कार्य करें और उस समय केवल अनुकूल अथवा समानधर्मा व्यक्तियों से ही सहायता मांगे। क्योंकि इस अंग के धारक को शीघ्र भाग्य सिद्धी मिल सकती है अतः आपधन लाभ के अनायास योगों पर अवश्य ध्यान दें, इसके लिये पहले तो अपनी जन्म पत्रिका किसी अच्छे ज्योतिषी को दिखला लें और भाग्य सिद्धि के योग के समय सावधान हो जायें। धन सुलभ करने के कुछ साधन हैं :—

—लाटरी।

—कर्ज प्राप्त करना।

—आर्थिक अनुदान प्राप्त करना।

—जमीन, जायदाद की खरीद, वेच से लाभ !

□ इन सभीं के लिये आप अपने गृह देवता को परखिये और शुभवेला में प्रार्थनापत्र, लाटरी का टिकट खरीदिये और उसके वाद यदि आप एक अंक के धारक हैं तो निम्न साव-धानी व्यवहार में लाइये :—

—परिणाम को जिनका समय प्रतिकूल न हो।

—लाटरी उस स्टेट की हो जो आपके अंक से मेल खाती है, जैसे '१' अंक वाले की लाटरी इस प्रदेश की होनी चाहिये:—

ए जैसे आन्ध्र।

जे जैसे जम्भू काश्मीर।

एस जैसे सोराष्ट्र।

इसके अलावा।

डी = जैसे देहली ।

एम = जैसे—मध्य प्रदेश ।

वी = वी—से शुरू होने वाली लाटरी ।

इसका चयन करते समय आप यह देखिये कि उनकी राजधानी कौन सी हैं ? यदि राजधानी प्रतिकूल हो तो लाभ नहीं होगा ।

इस प्रकार आपने विचार क्या है :—

—खरीदने की निधि ।

—खरीदने का वर्ज ।

—खरीदने का समय ।

—खरीदी गई लाटरी की स्टेट ।

—खरीदी गई लाटरी की राजधानी ।

—परिणाम की तिथि ।

—परिणाम करने वाला नगर ।

अब लाटरी लेते वक्त उसके अंकों पर ध्यान दीजिये, वर्ग अक्षर पर ध्यान दीजिये :—

१ = ए

२ = जे

३ = एस

प्रथम अंक होना चाहिये : १ !

और इनका योग होना चाहिये—१ !

जैसे एक अनुकूल अक्षर है ;—

ए १४५६७६६

ए—३—७

ए—१०

ए १०

इस प्रकार उस लाटरी से शुभ वेला में खरीदिये और खरीद

कर वे सभी सावधानी व्यवहार में लाईये जिनके कारण फल सुलभ होता है। जैसे :—

१—व्रत, उपवास।

२—दान।

३—शुभ कर्म।

४—अनुकूल वस्त्र धारण।

अनुकूल रत्न धारण करना? '१' अंक का अनूकूल रत्न है :—

पद्मपराग। इसके अन्य नाम हैं :—

प्रथिलित नाम—माणिक।

उर्दू नाम—चुन्नी।

फारसी नाम—याकूत।

अंग्रेजी नाम—रूबी।

इस रत्न का रविवार को, विशेषतय प्रथम तारीख पर पड़ने वाले रविवार का पांच रत्ति का पद्मपराग लेकर स्वर्ण मुद्रिका इस प्रकार जड़वालें कि वह पहली अंगुली का स्पर्श करता रहे।

निरंतर पूजा करे। प्रतिदिन १०८ वार जाप करें। रविवार को एक समय बगैर नमक का भोजन करें।

शौर्य-कल्पना और भावना का प्रतीक शुभांक

—दो—

दो अंक चन्द्रमा का अंक है और यह अंक है जब महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री जैसे देश निष्ट व्यक्ति पैदा हुये थे

और 'दो' अंक के धारक बने तो। दो अंक के व्यक्तियों की विशेषतायें हैं:—

१) चन्द्रमा मनसा जात : के अनुसार घटा बढ़ी, उतार-चढ़ाव के जीवन के अभ्यस्त दो अंक के धारक व्यक्ति अपनी विचारधारा को नित नूतन विचारों से पुष्ठ करते रहते हैं। महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री, प्रसिद्ध फिल्म स्टार आशा पारेख, माला सिन्हा, नैपोलिस अथवा मोरारजी देसाई सभी अस्थिर भविष्य के स्वामी बने और कभी समुन्द्र के ज्वार भाटे के समान सुख-दुख, लाभ-हानि, चिन्ता, निर्भीकता के अधिकारी बने। स्वयं माला सिन्हा ने एक बार कहा था, भाग्य न जाने कौन सा खेल खिलाता है, कुछ नहीं कहा जा सकता। कभी मुझे दम मारने की फुरसत नहीं होती और कभी कोई काम नहीं होता। स्वयं लाल बहादुर शास्त्री क्या रहे, इसका आभाष आपको इन तत्वों से मिलेगा।

- पितृ स्नेह से वंचित।
- अगाध निर्धनता।
- निरंतर उच्च विचार।
- निरंतर नेहरू परिवार और कांग्रेस से निकटता।
- कई बार रेल मंत्रालय से, ग्रहमंत्रालय से त्यागा पत्र।
- कई बार बिना विभाग के मंत्री।

जिस प्रकार अशुभता निश्चित नहीं रही उसी प्रकार शुभ समय भी बहकर नहीं आया। उपरोक्त महानुभाव के अलावा विदेश के अन्य व्यक्ति जो इस अंक के धारक बने उनका उल्लेख इस प्रकार है :—

(१) नेपोलियन तृतीय
(२) चार्ल्स द्वितीय
(३) अभिनेता दिलीप कुमार फिल्म स्टार

(४) सर आशुतोष मुखर्जी

(५) भूतपूर्व उपप्रधान मंत्री—मुरारजी भाई देसाई

(६) हिटलर

(७) मुसोलिनी

(८) हजरत मौहम्मद

इन सभी के जीवन में चन्द्रतत्व प्रधान होने के कारण निम्न विशेषतायें रहीः—

[१] शारीरिक रुप से अधिक सबल नहीं, मगर इसके बावजूद अपार मेहनती । पांठकों को महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री का सूक्षम शरीर तो याद होगा ही । मगर इसके बावजूद भी कैसे कल्पना शील कठोर एवं कर्मनिष्ठ रहे, उनके स्मरण से ही रोमांश हो जाता हैं ।

२. स्वभाव से परोपकारी ।

३. परिष्कृत ।

४. कल्पना शील होने के कारण, ताड़न, पीड़न, मार-पीट के अधिकारी ।

५. धैर्य का अभाव न भी हो तो साहस के साथ पूर्णता और महत्वकांक्षा का अभाव अक्सर खटकता रहता है ।

६. दूसरों के मन की बात जान लेने का गुण ।

७. नदी तट, समुन्द्र तट, जलतट, पर भाग्य का विष्वास ।

८. स्नायू संस्थान पर अधिक कुप्रभाव ।

अवगुण:—

१—आत्म विश्वास का अभाव ।

२—विचार का परिवर्तन ।

३—प्रेंम के मामले में अक्सर वदनाम होने का योग । दिलीप का जीवन इस विषय में ज्यादा दृष्ट का है जिन्हें निरंतर कई अभिनेत्रियों के साथ अपयश का भागीदार होना पड़ा ।

कामिनी कौशल, मधुबाला, वैजयन्ती माला, वहीदा रहमान के प्रसंग कोई यश तो नहीं लाये थे।

४. पालतू और स्वार्थी चापलूसों से अक्सर हानि का योग रहता है। आमतौर से लाल बहादुर शास्त्री का जीवन इसी प्रकार के कुप्रभावों से परिवर्तित होता रहा था और मुरारजी देसाई तथा आशा पारेख का जीवन इस बात का साक्षी है।

५. गहरे जल से खतरा।

६. स्त्रियां घातक।

रोग:—

'२' अंक के धारक निम्न रोगों के शिकार होते हैं :—

—द्यूत का रोग।

—स्नायू समस्यायें।

—पेट रोग। जैसे। अपच, अजीर्णता, आंत रोग, गैस ट्रबल

—जलोदर।

हृदय रोग।

मृत्यु:—आमतौर से '२' अंत के धारक मृत्युपर्यन्त संजीवता की मूर्ति बने रहते हैं, पर इनका अंक बड़ा हृदय विदारक होता है। जब जब आकाश में चन्द्रमा, दुर्बल होता है स्नायू रोग—खांसी, फेफड़े आदि प्रबल हो जाते हैं।

निर्बल समय:—

मास:

दिसम्बर: जनवरी: फरवरी !

नक्षत्र—जब चन्द्रमा निम्न नक्षत्रों पर हों :—

जैसे:—

कृतिक।

उत्तरायान।

उत्तरा फालगुनी।

तिथि:—

१ = ५

२ = १४.

३ = २३.

अशुभ वर्षों में ५—१०, २३, ३२, ५०, ५९, ६८, ७७, आदि अशुभ फलों के दाता हैं।

सबल समय:—चन्द्रमा के प्रतीक शुभ अंक 'दो' के धारक को आमतौर सबल समय आने पर निम्न लाभ होगा:—

—स्वास्थ्य लाभ।

—योजना लाभ।

—मित्र लाभ।

—परिवार लाभ।

—यात्रा लाभ।

—धन लाभ।

—यश लाभ।

यह नाम निम्न तिथियों से संभव है:—

सामान्य तिथि

हर मास की

क. १—२.

२—११

३—२०

४—२५

ख. ५—४

६—१

७—७

८१—१०

९—१३

१०—१६

११—१६

२३—२२

१४—२५

ये तिथियां दोहरा लाभ दे सकती हैं यदि ये सभी तिथियां सोमवार को पड़ेंगी।

निम्न समय में यदि तिथियां सोमवार को पड़ती हैं तो अधिक लाभ होता है:—

२० जून से २० जुलाई।

अतः दो अंक के धारक को २० जून से २० जूलाई तक ही शुभवेला में २, ४, ७, अंक के धारकों के साथ सम्बन्ध, अनुबन्ध आदि करना चाहिये :

—लाटरी निम्न अक्षर से प्रारंभ कभी खरीदें।

—राज्य।

बी. जैसे बम्बई। महाराष्ट्र का ४ अंक लाभकारी रहेगा।

१७=केरल।

७=तामिलनाड्

लाटरी का प्रथम अक्षर—

१=बी (बी)

२=एच के (के)

३=टी (टी)

अंक कुल योग दो २। जैसे:—

टी २९९८ए७

टी ३८

टी ११

टी १+७=२.

आप इसके अलावा इस समय प्रार्थना पत्र देकर कर्जा, खरीद बेच, यात्रा से भी लाभ कमा सकते हैं और उसके अन्तराल तथा सदैव निम्न वस्तुओं का उपयोग कर सकते हैं।

शुभ रंग के वस्त्र

निम्न प्रकार के रंग आपके लिये लाभकारी रहेंगे :—

१. मानसिक असन्तोष : सफेद।

सफेद रंग स्वभाविक पराक्रम, साहस और दुर्बलता का घातक सिद्ध होगा।

२. स्नायू उन्नति और श्रेष्ट जीवन के लिये। हल्का हरा रंग प्रयोग करें। इन रंगों का प्रयोग अशुभ फलों का द्योतक होगा।

- ☐ नीला
- ☐ काला
- ☐ बैंगनी

उपरोक्त शुभ रंगों को आप वस्त्रों, रूमाल. बिछावन आदि में प्रयोग करें। और उसके साथ ही चान्दी की अंगूठी में मुक्ता अर्थात मोती का धारण करें। मोती में निम्न विशेषता होनी चाहिये।

१—चिकना।

२—चमकदार।

३—कोमल।

४—सुडौल।

५—शुद्ध।

अगर आप चान्दी में मुक्ता नहीं जुटा सकते तो केवल चांदी की अंगूठी ही अनामिका की अंगुली में पहने, हर पूर्णिमा के दिन व्रत करें और भगवान शंकर का ध्यान करें। अस्वस्थ

होने की स्थिति में चांदी के वर्तन में जल पियें। भगवान शंकर आपके इष्ट देव हैं अतः आप उनकी पूजा अर्चना करें।

और शादी व्याह सभी २० जून से २७ जुलाई तक के बीच निवटा लें। उन्हीं से विवाह सम्पन्न करें जो २० जून और २७ जुलाई के बीच पैदा हुये हैं।

जीवन में सफलता का ज्ञान और आविष्कार का अंक

—तीन—

चर्चिल, लार्ड रसेल, अब्राहमलिंकन, मानिकशा और जनरल नासिर की जिन्दगी में सदैव साहस और दृढ़ता, सौन्दर्य और विचार परिपक्वता के अलावा जो है वह है तीन का अंक। तीन का अंक विज्ञान का परिचायक अंक है, तभी तो निम्न महानुभाव इसी अंक के अन्तर्गत अतिरिक्त रुप से आते हैं :—

१. अब्राहमलिंकन

२. डार्विन

३. वाल्टेयर

४. जगदीश चन्द्रबसु

५. रूजवेल्ट

६. विवेकानन्द

७. फिल्म कलाकार : हेलन, वहीदा रहमान, प्राण, जैनिफ और निर्माता निर्देशक ऋषिकेश मुखर्जी, इन सभी के जीवन को देखने परखने के बाद हम इस महत्वपूर्ण अंक के धारक के विषय में निम्न धारणायें बना सकते हैं :—

○ग्रह देवता : बृहस्पति। और बृहस्पति प्रतीक है :—

—साहस।

—श्रम।

—शक्ति।

—ज्ञान और धर्म।

इनके स्वभाव में स्थापित है। सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय वाली वाणी और वृहस्पति गृह के विषय में कुछ साधारण जानकारियां इस प्रकार हैं:—

—सब गृहों से बड़ा।

—शुक्र के अतिरिक्त सबसे तेज।

व्यास—सतासी हजार सात सौ मील। अर्थात पृथ्वी के व्यास से लगभग ग्यारह गुणा।

धूरी—भ्रमण :—दस घन्टे।

सूर्य परिक्रमा —१२ वर्ष।

उपग्रह —आठ चन्द्रमा। सभी पृथ्वी चन्द्रमा के समान।

अधिमित्र —मँगल, चन्द्र।

मित्र —शनि।

सम —सूर्य।

शत्रु — --।

अधिशत्रु —बुद्ध।

एक चरण दृष्टि—३, १०।

दो चरण दृष्टि —९, ५।

तीन चरण दृष्टि—८, ४।

चार चरण दृष्टि—७।

अधिकार स्थान—भूगाश्य।

अतिरिक्त नाम—जूफिर जरिव, गुरू आदि।

पृथ्वी दूरी —४८ करोड़, पचास लाख मील।

कारक : सन्तान।
सन्तान सुख।
विद्या।
कला।
यश।

निवास : हाथ में इसका निवास तर्जनी अंगुली पर होता है।

तीन के अंक के धारक की सामान्य विशेषतायें इस प्रकार हैं :—

☐ विचारों का सुन्दर और सुरूचि पूर्ण ढंग से व्यक्त करना।

☐ द्रव्य का आगमन, मगर उतना ही खर्च। धन न होने की स्थिति में निराशा।

☐ अतिरिक्त स्वार्थ लिप्सा।

☐ विशेष व्यय, मौज, शौक आदि तथा सजावट वगैरहा पर खर्च करना एक स्वभाव।

☐ अपार महत्वाकांक्षा।

☐ आकस्मिक धन योग।

☐ भाइयों से विशेष लाभ न होना।

☐ स्वेच्छा चारिता के प्रति विशिष्ट लगाव।

☐ उदार, मगर दुर्बल।

☐ वाक पटु।

☐ सहनशील।

☐ मित्रों द्वारा विश्वास घात की सम्भावना।

☐ यात्राओं से लाभ।

☐ सम्पर्क से सुख। उन्नति। और आयु के साथ काम। आमतौर से '३' अंक के व्यक्ति निम्न प्रकार के व्यवसायों से

लाभ कमाते हैं :—

१. शिक्षण व्यवसाय।

२. प्रकाशन व्यवसाय। लेखन भी।

३. उतिजि व्यापार।

४. नेतृत्व।

५. राजनीति।

६. धर्म सम्बन्धी।

मगर जब राजनीति और धर्म का सामजस्य होता है तो औरंगजेब जैसे कट्टर पँथी व्यक्ति का समावेश होता है और उसमें कठोरता भी आ जाती है।

□सभी तीन के अंक की एक सामान्य बात यह देखी गई है कि जीवन के साथ ही यश बढता है। मगर इतने गुणों और अच्छी विशेषताओं के अलावा उनमें निम्न अवगुण भी हो सकते हैं :—

१-अत्यधिक धन व्यय करने की आदत।

२-इर्ष्या।

३-डींग मारने की स्थिति।

४-गलत ढंग से पैसा कमाने की आदत हो जाना।

५-सट्टा आदि लगाने की इच्छा।

३-प्रेम के क्षेत्र में असफलता का सामना होना।

७-क्रोधी

८-पारिवारिक जीवन में अच्छा जीवन साथी होने के कारण भी मन न लगना।

९-कामुक।

१०-अति गरिष्ट भोजन प्रिय।

रोग;—

आमतौर से ऐसे व्यक्तियों को निम्न रोग हो सकते हैं:—

—स्नायू रोग ।

—प्रबल कामवासना ।

—स्थूलता ।

—पित्त रोग जैसे पित्त्ज्वर, पित्त पित्तप्रकोप, पित्त उचटना।

—उदरशूल, पेट के रोग के अलावा तीन अंक के धारक की त्वचारोग, सन्निपात, खांसी आदि हो जायेंगे । धन की चिन्ता, धन न होने और निरंतक धन के सम्बन्ध में परिणाम होने से मन परेशान रहेगा ! इसलिये तीन अंक के धारकों को समस्त सल्फा ड्रगल (गंधक उत्पादित दवायें, चर्बी, घी और तेल से गरिष्ट पदार्थ तथा मसालों का प्रयोग न करने की सलाह दी जाती है, खास तौर से इन दिनों जब उनका दुर्बल समय होता है। दुर्बल में उन्हें इर्ष्यातिरेक, क्रोधादि से बचने का भी परामर्श दिया जाता है ! अन्यथा क्षीण ब्रहषपिति चर्म रोग, क्षीण स्तम्भंन शक्ति, गुप्तांगों में पीड़ा, वायु का प्रकोप, सैंप्टिक, स्थूलता, प्रकृत आदि के रोग हो जाते हैं !

अतः सुयोग ढूंढ़ कर दुर्योग को समाप्त करना चाहिये और हर बार के विषय में निम्न जानकारी याद रखनी चाहिये ।

शुभ दिन:—

(१) सोमवार : धनलाभ, मित्रमिलाप, आरोग्यता, राजकार्य।

(२) वृहष्पतिवार में सफलता । शुभ समाचार, साथी संगति, व्यापार में वृद्धि, पद वृद्धि, ससुराल से स्नेह, यश लाभ, भाग्य सिद्धि ।

(३) शुक्रवार : भोग विलास, नये आभूषण का योग ।

(४) शनिवार : रति सुख ।

अशुभ दिन:—रविवार; मंगलवार ।

शुभ तिथि:—

१—३
२—१२
३—२१.

नेष्ट तिथि:—

१—७
२—१६
३—२५.

शुभ मास:—१९ फरवरी से मार्च।
२१ नवंबर से २० दिसम्बर।

अशुभ नेष्ट मास : जुलाई !

शुभ वर्ष:—३, १२, २१, ३०, ३३, ३६, ४८, ५७, ६६, ७५ और इसके अलावा आपके अंक से विभाजित सभी अंक !

शुभ समय का उपभोग करने और अशुभ ग्रह को टालने के लिये उपाय।

पीला रंग इस्तेमाल करिये

पीला रंग आपके सर्वथा अनुकूल रंग है, इसके अलावा गुलाबी बैंगनी और नीला रंग भी लाभदायक हो सकता है। आप पीला रूमाल, पीला वस्त्र धारण करें और विद्दावन में पीले रंग का उपयोग करें।

पुखराज आपका रत्न है

पुखराज जिसके नाम निम्नलिखित भी हैं आपका श्रेष्ट धारक रंग है, मगर हल्दी के रंग के समान पीला, केसरिया, नींबू जैसा, सफेद पुखराज न लेकर आप केवल स्वर्ण की आभा से युक्त कीर्ति पूर्ण तीन रत्ति.का पुखराज ही सोने की अंगूठी में इस प्रकार तर्जनी अंगुली में पहनना चाहिये कि वह हाथ को स्पर्श करती रहे। यह अंगूठी पुष्प नक्षत्र में तैयार कराके ब्रहष्पतिवार को धारण करें और लाटरी आदि का टिकट जो भी खरीदना हो वह

उसी दिन इस प्रकार खरीदें अथवा ऐसे कार्य करें कि:—

राज्य का प्रथम अक्षर:—

सी. एल. वी.

राजधानी का प्रथम अक्षर : सी.=कलकत्ता।

एल.=लखनऊ।

वी.=वाराणसी।

लाटरी का प्रथम वर्ण : सी. एल. वी.

अंक =३

योग =३

उदाहरण : एल. ३८७ डब्लू ६२

एल. ३०

एल. ३

इसी प्रकार कर्ज पाने के लिये आप जिन व्यक्तियों से सम्पर्क कर सकते हैं उनका नाम इन अंकों के अनुसार ही होना चाहिये ताकि आपको धन की व्यवस्था हो सके।

इष्ट देव की पूजा करें

'तीन' अंक के धारकों को इष्ट देव भगवान विष्णु हैं, जिनकी सहचरी लक्ष्मी सभी प्रकार से धनधान्य पूरित करने वाली है। उन्हीं का एक नाम है विष्णु सत्यनारायण। अतः हर पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण का व्रत करें। प्रातः विष्णु भगवान का स्मरण करके दिन प्रारम्भ करें और नित्य १०८ दानों की माला का यह जाप करें:—ॐ वृ वृहष्नलेयं नमः॥ इस प्रकार आप उन सभी 'तीन' धारकों में श्रेष्ठ हो सकते हैं। और मन वांछित धन सिद्धि का योग पा सकते हैं।

उथल पुथल : संघर्ष और निरन्तर कार्यों की ओर अग्रसर अध्यव-सायं का प्रतीक अंक

चार

चार अंक के धारक मनुष्य स्त्री हो या पुरुष अपने साहस, धैर्य, बुद्धि के बल पर जीवन की हर परेशानी को हटाते चलाते हैं और उनकी स्थिति कभी सामान्य नहीं रहती। राजा और रंक जैसा हिसाब होने पर भी साहस में कमी न होना विष्फोटक प्रजापति अथवा हर्षल काधन है जिसके अन्तंगत बड़े बड़े उतार चढ़ाव देखने को मिलते हैं। हमारे ज्ञान अनुसार जार्ज वाशिंगटन से लेकर निम्न हस्तियों का चार का अंक ही है:—

१. सचिन देव वर्मन फिल्म संगीत निर्देशक)
२. किशोर साहू (,, निर्माता निर्देशक)
३. अशोक कुमार (,, अभिनेता)
४. वैजयंती माला (,, अभिनेत्री)
५. नूतन (,, ,,)

आमतौर से हर्षल की उथल पुथल का सबसे बड़ा प्रभाव 'चार' के धारक पर यह पड़ता है कि वे सामान्य जन जीवन के प्रति अपार सन्देह युक्त रहते हैं और उन्हें तिल भी समस्या से उलझना पड़ता है। एसे व्यक्तियों में कुछ अड़ियल टट्टू हो जाते हैं तो कुछ क्रोध वश अस्करमयता के शिकार होते हैं और जब परमोत्कष पर पहुंचते हैं तो यह नहीं मालूम होता कि यहां पर कितने समय का ठिकाना होगा? मगर आमतौर '४' अंक के धारक व्यक्ति उन्नति करते हैं। मगर कभी तोला कभी माशा जैसी स्व-

भाव के कारण इनकी लोकप्रियता पर निरन्तर आलोचना होती र:ती है। आमतौर से चार के अंक का जीवन एक ऐसे जासूस का जीवन होता है जो निरन्तर अपने अन्दर में रहस्य छिपाये रहे।

शत्रुओं की समस्या से ग्रस्त हर्षला ग्रह धारक निरंतर षड-यंत्रों का विस्फोट करते रहेंगे!

चार अंक के धारक के कुछ विशिष्ट गुण हैं:—

○ सर्वगुण सम्पन्न!

○ मन के रईस।

○ उतावले।

○ षड़यंत्रकारी मित्रों के बीच रहने में औचित्य खोज लेना।

स्वभाविक विशेषतायें:—

—जल्द बाजी।

—क्रोधी स्वभाव।

—धन कम टिकना।

—अस्थिर बुद्धि।

—मित्रों से हानि।

—निर्णय में देरी।

—स्वार्थ को प्राथमिकता।

—उदासीनता। एकाकीपन।

—फिजूल खर्ची।

—बहुत सा धन के बल ऊपर की टीमटाम में व्यय।

—जीवन सीथी का स्वास्थ्य कमजोर रहना। आमतौर से ऐसे व्यक्ति अपने क्षेत्र से अलग हटकर शादी करते हैं, जैसे नूतन ने शादी की थी एक सैनिक अधिकारी 'से और वैजयंती माला ने शादी की थी डाक्टर वाली से। दोनों का ही फिल्म क्षेत्र से लेना

देना समाप्त हो गया।

ये लोग जीवन के क्षेत्र में असीमता भरने के लिये तरह तरह की बातें करते हैं, योजनायें बनाते हैं और इस प्रकार अपनी परेशानियां स्वयं बढ़ाते हैं आमतौर से केवल मात्र इस ग्रह के कारण अथवा इस अंक के धारक के रूप में अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। क्योंकि आमतौर से ये लोग निम्न रोगों के शिकार रहते हैं:—

—रक्त अभाव। अग्नीमिषा।

—जुकाम।

—छूत के रोग।

ऐसे लोगों को पशुओं से भीड़ने, शिकार करने अथवा पशुओं के बीच रहने का शौक होता है, जिसके कारण आमतौर से कई बार दुर्घटनाओं के शिकार हो जाते हैं!

जब इनका कमजोर समय आता है तो इनमें निम्न अवगुण पैदा होते हैं:—

—स्वभाव में उग्रता।

—षडयंत्रों के प्रति अधिक दिलचस्पी।

—कर्जा।

—अवसरों का हाथ से निकल जाना।

—राज का प्रकोप।

—शत्रुओं का प्रभाव।

—क्रोधी मित्रों के कारण परेशानी।

—क्षति।

—निर्णय न लेने अथवा गलत निर्णय लेने के कारण परेशानी।

—फिजूल खर्ची।

—योजनाओं में गड़बड़।

अशुभ समयः—

अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर के मास में ४' अंक के धारक व्यक्तियों में निम्न बातें देखने को मिलती हैं:—

--रंग।

—उदासीन।

—उत्साह की कमी।

—आलस।

—परेशानी।

इसका कारण यह है कि यह निर्बल समय होता है, जब कि अच्छा समय इस प्रकार वर्णित किया गया है।

यात्राः—आमतौर से हर्षल से युक्त चार अंक के धारक व्यक्तियों के लिये निम्न समय उपयुक्त माना गया है:—

२१ मार्च से २८ अप्रेल और ११ जुलाई से बीस अगस्त। इस दौर में पड़ने वाली तिथियों की जानकारी इस प्रकार हैं:—

'अति श्रेष्ठ तिथिः—

१=४
२=१३
३=२२
४=३१

सामान्य श्रेष्ठ तिथिः—जब ये तिथियों सोमवार, रविवार और शनिवार को पड़े तो।

अपने जीवन को यथास्थिर बनाने के लिये आपको शुभरंग का प्रयोग करना चाहिये। चार के धारक के शुभरंग हैं, हर चमत्कार रंग है जिनमें सबसे महत्वंपूर्ण रंग है नीला। नीला चश्मा, नीला रूमाल, नीला पर्दा, नीला बिछोना और नीले परिधान के अलावा मोर के पंख सरीखा रंग वाला नीलम धारण करना चाहिये।

नीलम रत्न को नीलमणी (संस्कृत), सफाधर (अंग्रेजी) तथा फारसी भाषा में नीलविल याकूत की संज्ञा दी जाती है। यह रत्न यदि लाभ नहीं करता तो हानि करता है अतः इसे कुछ समय के लिये धारण करके अनुकूलता की जांच कर लेनी चाहिये छः रत्ति का नीलम पंच धातु की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को धारण करना चाहिये। और यदि यह फलदायक सिद्ध न हो तो छः रत्ति का तो गोमेद बीच की अंगुलियों में धारण करना चाहिये। ऐसे व्यक्तियों का गणेश चतुर्थी और सोमवार को गणेश पूजन करना चाहिये। गणपति गणेश चार अंक के धारक के व्यक्ति के इष्ट देवता हैं और वे सभी शुभकार्यों में सर्वप्रथम पूजे जाते हैं:—

ऐसे व्यक्तियों को निम्न व्यक्तियों के साथ व्यापार; शादी ब्याह, अनुरोध, कर्ज का लेन देन उन व्यक्तियों से कीजिये जिनके नाम के अनुसार इस प्रकार वर्णित है:—

नाम का अक्षर—डी, एम, डब्लयू जैसे दीप कुमार, महन्द्र-कुमार, वाल्टर और उनका योग ४ से फेरे ! इसी प्रकार प्रयास करिये कि लाटरी का टिकट निम्न राज्य के हों:—

डी. = जैसे देहली।

एम. = जैसे महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश।

डब्ल्यू. = वाशिंगटन आदि।

इसके अलावा शेष सभी बातें अन्य अंकों के अनुरूप समझनी चाहिये।

इसके अलावा '४' के धारक को १, १०, १९, २८ के मित्र व्यक्तियों से मित्रता करनी चाहिये, ये इनके लिये उपयोगी सिद्ध होते हैं। गुडरध के अनुसार इस अंक के धारक व्यक्ति का स्व-भाव तितली की तरह होता है। और इनका लोचदार व्यक्तिव सदैव इनके लिये परेशानी बन सकतीं हैं। और ये निरंतर परे-शानी का पात्र बन सकते हैं।

आस्था और विवेक का प्रतीक
बुद्धि का प्रतीक अंक
— पांच —

बुद्ध ग्रह के विषय में ज्योतिषविदों का कथन है कि सूर्य से तीन करोड़ साठ लाख मील की दूरी पर स्थित बुद्ध ग्रह का व्यास इकत्तीस सौ मील का है और लगभग ८८ दिनों में यह सूर्य की पूरी परिक्रमा कर लेता है। इसके अन्य गुण हैं :—

स्वामी	: दिशा उत्तर।
पृथ्वी से दूरी	: १३, ३०,००,००० मील।
अधिमित्र	: सूर्य
मित्र	: गुरू
सम	: शुक्र और चन्द्रमा
शत्रु	: मगल और शनि।

और इस ग्रह का प्रतीक अंक है ५। अर्थात ५, १४, २३ को पैदा होने वाले व्यक्ति का गृह देवता है बुद्ध। बुद्ध का प्रतीक होता है अतः इस अंक के धारक व्यक्ति में निम्न विशेषतायें होती हैं :—

○ सम्मोहित कर लेने वाला व्यक्तित्व।

○ यात्राओं से आनन्द।

○ प्रखद मस्तिष्क के कारण निरन्तर तर्क शील मन।

○ हर पल में खुश रहने का मनसूवा।

○ सुन्दर और चिर युवा, चिर युवती बने रहना।

○ हर क्षण सीखने की प्रगाढ इच्छा।

○कार्य की प्रधानता ।

○स्वतन्त्र इकाई के रुप में जगमगाने की क्षमता ।

○व्यापारी मन हर वक्त कुछ करने को छटपटाता मन ।

○कम से कम दो बार लाटरी सट्टे आदि से धन प्राप्ति का योग ।

इन विशेषताओं के अलावा निम्न अवगुण भी इनको घेरे रहते हैं जो निर्बल समय में उभर आते हैं :—

—उदासीन ।

—हंसी खुशी की बजाय सदैव गमगीन रहना ।

—निरन्तर रोगी ।

— मित्रों से दुर्भाव । उन पर अविश्वास और उनकी उपेक्षा.

—अपनी बुद्धि के सामने किसी की बुद्धि न चलने देना ।

—व्यर्थं के खर्चों में परेशान ।

—निरन्तर उधेड़ बुन में लगे रहना ।

—जोखिम से डर ।

—भाग्य पर अधिक विश्वास करना ।

—दूसरों के प्रति कठोरता ।

—व्यापार में हानि ।

—मानसिक चिन्ता ।

—कमजोरी ।

रोग :—ऐसे व्यक्तियों को जिनका धारक अंक '५' है आमतौर से जो बिमारियां होती हैं उनका सम्बन्ध चर्म रक्त और हृदय से होता है। मन में अकुलाहट होने के कारण बुरा समय आने पर पांच अंक में धारकों का कर्जा डूब जाता है। पैसे के कारण काम रुक जाता है और स्वतन्त्र व्यवसाय में अवरोध आ जाता है । तभी तो सरस्वती का हर पटु पुत्र, कलाकार केवल कागजी पहलवान होता है और उसे निरन्तर कई

रोगों का सामना करना पड़ता है। जिनमें रक्त चाप, रक्त अभाव, चर्म रोग, रक्तोषणता, पक्षाघात जैसे मारक रोग भी हो जाते हैं और सबसे ज्यादा असर पेट के रोगों पर पड़ता है। अतः बुद्ध गृह के प्रतीक अंक '५' के धारक को नित्य प्रति सर्दी, जुकाम, फ्लु जैसे छूत के रोगों के प्रति सावधान और नमक का कम से कम प्रयोग करने की सलाह दी जाती है।

बुद्ध गृह के आधीन '५' अंक के धारक व्यक्तित्वों के जीवन में उतार चढ़ाव अक्सर आते रहते हैं। उनका जीवन, जीवन समाज, जीवन विद्या सभी कुछ अस्थिर होता है, और यह विवेक और आस्था का अंक आमतौर से उस समय अधिक फलपूर्ण होता है जब निर्बल समय आ जाता हैं। मगर निर्बल के बाद सबल आता है और उसी प्रकार दिन फिरते हैं, जैसे पिछले दिनों के प्रसिद्ध फिल्म निर्माता और निर्देशक का जब दूर की असफलताओं से जब आम बुद्धि जो चिंतित थे तो एक सबल समय ने उन्हें पुनः प्रतिष्ठित कर दिया हैं। अपने विचारों को दूसरों पर लादने में जरा भी संकोच न करने वाले ये महानुभाव कभी गम और कभी उदासी का वातावरण ओढ़े निरन्तर बुद्धि और विवेक का प्रश्रय लेकर कला और साहित्य के नये आयाम प्रस्तुत करते रहते हैं। '५' अंक के धारक व्यक्तित्व में इन महानुभावों का समावश भी होना जरूरी है :—

—सैक्स पीयर
—डयूक आफ विन्डसर
—सुभाष चन्द्र बोस
—अलबर्ट आइन्सटाइन
—लोकमान्य तिलक
—राजकपूर
—सायराबानो

—कामिनी कौशल

—कालमक्सि

धर्म पर आस्था हो या नहीं मगर जिस पर ये आस्था रखते हैं उसे पूरा संसार स्वीकार करते हैं और इनके अनुयायियों की संख्या निरन्तर बढ़ती रहती है।

अनुकूल समय : (तिथि)

१—५
२—१४
३—२२

उपरोक्त तिथियां १९ मई से २० जून और २१ अगस्त से २० सितम्बर के दौरान इन दिनों में पड़ती है तो इनका महत्व बढ़ जाता है :—

—सोमवार

—बुद्धवार

—शुक्रवार।

इन तिथियों को अधिक महत्व पूर्ण बनाने के लिये उपयुक्त रंग, उपयुक्त रत्न धारण करके धन की अधिष्ठात्री लक्ष्मी देवी की उपासना करें।

अनुकूल रंग : अनुकूल रत्न

'५'-धारक का अनुकूल रंग है : हल्का हरा, या भूरा रंग। इस रंग का प्रयोग आप इस प्रकार कर सकते हैं कि आप हरा रूमाल, हरा पैन, हरे रंग की जुर्राबें आदि पहने। कमरे के पर्दे, सोफे सैट, बिछावन भी इस रंग का हो सकता है। इन रंग के कारण आपका मनोबल ऊंचा रहेगा, और दुख, परेशानी आपके पास नहीं फटकेगी।

अनुकूल रत्न– पन्ना

६ रत्ती का पन्ना जो शुद्ध दोष रहित, पारदर्शी, चमकीला, तेजस्वी और अखन्ड कम से कम ६ रत्ती का सोने की पाल्नेटिनम की अंगूठी में कनिष्ठा अंगुली में धारण करें। पन्ना कई रंगों में मिलता है, जैसे मोर के पख जैसा पीकाक ब्लू रंग, अथवा काई का रंग, या तोते के पंख के वर्ण या सरेप अथवा तेंदुल के फूल के शरीर में रंगने का। इनमें काई का रंग वाला पन्ना श्रेष्ट समझा जाता है। इसे इस प्रकार जड़वाच चाहिये कि कनिष्ठा से स्पर्श करती रहे। पन्ना पहनने अथवा निम्न साव-धानी व्यवहार में लानी चाहिये :—

○स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखें। कम रोशनी, कम हवा-दार स्थान और नमक का परहेज करें।

○स्थिर बुद्धि रखना इन लोगों के लिये आमतौर से सहज नहीं होता। फिर भी स्थिर बुद्धि रखकर एक ही व्यापार में अपना मन लगाकर ये चरम सुख प्राप्त कर सकते हैं।

○यात्रा इम अंक के धारकों को अपार आनन्द देती है, मगर स्थिति कुछ ऐसी होती है कि इन्हें यात्रा का योग बहुत कम मिलती है। इस प्रकार वे सदैव यात्रा के लिये तरसते रहते हैं।

पूर्णमासी का व्रत

'५' के अंक के धारकों को आमतौर से कम से कम दो योग अपार धन कमाने को मिलते हैं। उन दोनों, सुअवसरों का लाभ उठाने में जरा भी घबराहट न हो, इसलिये यह सलाह दी जाती है कि वे नित्य ही मां लक्ष्मी की पूजा करें और एकनिष्ठ होकर २१ मई से बीस जून अथवा २१ अगस्त से २० सितम्बर का ऐसा लाटरी का टिकट खरीदें जिसकी स्टेट निम्न आचारों

से शुरू होती है :—

(१) ई

(२) एन

(३) एक्स

क्योंकि हिन्दुस्तान में इस प्रकार का कोई राज्य नहीं है अतः इसके बदले आप उन राज्यों की लाटरी खरीद सकते है जिनका प्रथम अक्षर हो :—

ए—जैसे	आंध्र
	आसाम
टी—जैसे	तामिलनाड, त्रावणकोर।
जे—जैसे	जम्भू एण्ड काश्मीर।

इसके साथ प्रथम अक्षर भी 'ए, जे, टी' में से हो उनका योग कुल मिलाकर '५' होना चाहिये।

सौंदर्य और सौभाग्य का

प्रतीक

यशस्वी अंक

—६—

आकाश का चमकीला नक्षत्र शुक्र का प्रतीक मूलांक ६ उन नरनारियों का निर्माण करता है जिनकी सुघड़ता, शालीनता, अदाकारी और सजने सजाने की कला पर अन्य अंक के लोग न्योछावर होते है। यात्रा के दौरान में मुझे ६ के अंकों की छटा देखने से मिलती है। दूसरा सलोना उदाहरण उस वक्त प्रस्तुत हुआ जब मैंने एक महिला के माथे पर ऐसी चमचम बिन्दी लगाये देखा जिसका आकार और रंग दुर्लभ होता है। मगर वास्तविकता

कुछ और ही थी। किसी ने उस रंगीन कागज को पंच किया था और उस महिला ने उसे माथे पर लगा कर अपने चार चांद लगा लिये थे। उसका अंक '६' ही था! अर्थात शुक्र की महिला और इस प्रकार के स्त्री पुरुष वास्तव में कलाकारी के सुघड़ उदाहरण होते हैं! शुक्र ग्रह के बारे में खगोल सम्बन्धी ज्ञान इस प्रकार हैं :—

ग्रह : शुक्र !

अधि मित्र :—!

मित्र : शुक्र !

नभभाव : सूर्य, चन्द्रमा, बुद्ध, शनि !

शत्रु : मंगल।

अधि शत्रु :—!

इस प्रकार इस दैत्य गुरु का अधिकार मुख मुद्रा पर होता है। इसके अन्य नाम हैं :

—मृत्यु।

—सिन।

—वीरस !

राशि : जिनका स्वामी है : वृष और तुला राशि।

नक्षत्र : भरणी, पूर्वा फाल्गुनी' पूर्नीवाठा !

लिंग : स्त्री लिंग ।

उच्च स्थान : मीन।

निम्न स्थान : कचा।

भिन्न राशियां : धनु और मकर।

शत्रु राशियां : कर्क और मीन !

व्यवहार :

सात्विक : बुद्ध।

तामस : शनै : रचर : और राहू।

शमगुण . सूर्य, चन्द्रमा और मंगल ।

दैनिक गति : २३ घन्टा, २२ मिनट ७ सैकेन्ड ।

पृथ्वी से दूरी : ६ करोड़ चालीस लाख मील !

व्यास : ७,७०० मील ।

महा दशा : २० वर्ष !

अतः '६' अंक के धारक की विशेषताओं की चर्चा इस प्रकार है :--

● सुघड़, फैशन परस्त, कला मर्मन्त, गुण पारखी और कम से कम एक कला के प्रेमी :—

—सफ़री, काव्य, संगीत, चित्र कला ।

● जनता, मित्रों और आस पास लोक प्रिय ।

● सम्पूर्ण रूप से व्यवहारिक, नीति बाज ।

● योजना बद्ध काम करने को उत्सुक ।

● स्वभाव से काम प्रिय । कामुक ! वासनामय । भावुक । शिष्ट । न्याय प्रिय मगर कुंठित ।

○ इर्ष्यालू ।

● चंचल, अस्थिर मस्तिष्क ।

● प्रभावशाली, नम्र, मोहक, सभ्य, अजात शत्रु मगर मित्र रहित ।

● एकांत खलने वाला, मगर इसके वावजूद एकांकी रहने को बाध्य ।

● सौंदर्य प्रेमी !

साथ में ये अवगुण भी होते हैं !

—सहज विश्वास के कारण निरन्तर खतरा ।

—तर्क कुतर्क से झगड़े का भय !

—स्त्री को पुरुष जाति से और पुरुष को स्त्री जाति से अपयश की सम्भावना । धन हानि । श्रम हानि ! प्यार के मामले में

बिल्कुल असफलता प्यार प्रेम और परतिया का संग आपके पारिवारिक जीवन को तबाह कर सकता है। पर स्त्री पुरुष के कारण आपके परिवार में तबाही आ सकती है इसका ध्यान रखिये।

—कोई नशा पालना मूर्खता है। आप कोई नशा पाल कर अपने पैरों में स्वयं कुल्हाड़ी मारेंगे।

—गरिष्ट भोजन आपकी रूचि जरूर है। मगर वह हानि कारक सिद्ध होगा !

इसलिये उन महान्भावो के नाम को जान लेने चाहिये जो '६' अंक के साथ इस ससार में आये :—

—नैपोलियन प्रथम।

—दलाई लामा।

—चंगेज खां।

—अकबर महान्।

—योगीराज अरविन्द।

और मोहम्मद रफी, पृथ्वी राज कपूर तथा तलत महमूद। आमतौर से '६' का अंक अवतरित व्यक्ति स्वस्थ रहते हैं, मगर जब उनका समय निर्बल होता है तो उनको निम्न रोग हो सकते हैं :—

☐दमा, खांसी, ब्रोकाइडिस्ट।

☐फेफड़े के रोग।

☐कफ रोग।

गुप्त रोग।

☐पेट के रोग जैसे कब्ज आदि।

'६' के अंक वाले व्यक्ति निम्न व्यवसाय करके धन लाभ कमा सकते हैं :—

—कागज का व्यापार।

—प्रकाशक व्यवसाय।

—कमीशन पर काम करना।

—आड़त।

—विलास प्रिय वस्तुओं का; आभूषणों का, शृंगारिक प्रसाधन और दैनिक व्यवहार की वस्तुओं का व्यवसाय।

निर्बल समय में ऐसे व्यक्ति निम्न पेशों की ओर भागते हैं :-

—सगीत !

—कला साहित्य।

—चित्रकला, प्रदर्शनी।

—खनिज सम्बन्धी कार्य।

निर्बल समय में उनका मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है और क्रोध वश होकर अपना काम बिगाड़ लेते हैं। इसका पहला प्रभाव इनके मन पर पड़ता है जो उदासीनता के गर्त में पड़ जाता है। उसे हटाना ही सर्व प्रथम कर्त्तव्य है। आमतौर से इनका निर्बल समय होता है :—

अप्रेल।

अक्टूबर।

नवम्बर !

शुभ तिथियां हैं :—

१ = ६

२ = १५।

३ = २४।

४ = ९।

५ = १२।

६ = १५।

७ = १८।

८ = २१

९ = २४

१० = २७

शुभवार:—अनुकूल दिवस के रूप शुक्रवार का और सोमवार का नाम लिया जाता है। अगर उन दिनों उपरोक्त कोई तिथि शुक्रवार या सोमवार को पड़े तो अधिक लाभकारी हो सकती है। उसके लिये उपयुक्त रंग, उपयुक्त रत्न धारण करें।

उपयुक्त रंग:—इस अंक के धारक व्यक्ति का शुभ रंग है हल्का नीला रंग, हल्का गुलाबी अथवा चमचमाता सफेद रंग अत्यन्त अनुकूल रंग है। आप इन रंगों में से किसी एक रंग का रूमाल जरूर अपने निकट रखिये। और सफेद वस्त्रों में तो आपका दो रूप वैसे भी निखर उठता है। खासतौर से उस वक्त अब आप अनुकूल रत्न पहने।

अनुकूल रत्न

'६' अंक के धारक व्यक्तियों का अनुकूल रत्न हीरा है। हीरा कितना बडा हो इसके लिये यही ध्यान रखिये। हीरे को इस प्रकार सोने की अंगूठी में जड़वाकर कनिष्ठा अंगुली में किसी शुभ शुक्रवार के दिन पहने कि यह अंगुली को स्पर्श करता रहे। इस दिन आप व्रत रखें और हो सके तो सोमवार या शुक्रवार को केवल एक समय बगैर नमक का व्रत करें।

उत्तर भारत में धर्मप्राण महिलायें शुक्रवार को संतोषी माता का व्रत करती हैं। इस दिन वे सही वस्तुओं का भी परहेज करती हैं। पुरुष सोमवार के दिन बगैर नमक का भोजन करके अपने भाग्य सिद्धि के प्रशस्त करने की ओर चलते हैं और निरन्तर इस मार्ग को अधिक प्रशस्त करने के लिये प्रतिदिन शुद्ध मन शुद्ध वस्त्र धारण करके निम्न जाप को १०८ बार जपते हैं, जाप है:—

ॐ मंग मंग भ्रां हां हां हा हे हे हे स्वाहा ॥

इससे इनके जीवन मे जो दैत्य दर्शन भोग दर्शन है वह कर्त्तव्य में आ सकेगा और फिर अधिक सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक बनकर संयम पूर्ण जीवन बिता सकेंगे। क्योंकि शुक्र के मूलांक

वाले व्यक्ति के जीवन में स्वभाविक रूप से लापरवाही को महत्व-पूर्ण स्थान है और लापरवाही के कारण वे अपने जीवन के सुयोग सुअवसर खो डालते हैं। अर्थ साधन, धन प्राप्ति के ढेरों योग वे लापरवाही और फिजूल खर्ची से इस प्रकार खो डालते हैं जैसे स्वाति नक्षत्र की बूंद अपना अस्तित्व समाप्त कर जाती है।

आमतौर से इस अंक के धारक को निम्न प्रकार से धन प्राप्ति हो सकती है:—

(अ) फिल्म व्यवसाय

(ब फिल्म सम्बन्धी प्रकाशन व्यवसाय

(स विज्ञापन

द) सैक्स सम्बन्धी, शृंगार की बेच खरीद

(ध) सट्टे से भी लाभ होने की सम्भावना, मगर उतनी ही हानि उठानी पड़ेगी।

(प) लाटरी, आकस्मिक धन का योग कुल ही '६' मूलांक के हाथों में होता है अतः केवल समय देखकर, उसी प्रकार साव-धानी बरते और देख लें कि लाटरी के टिकट में निम्न विशेषतायें होनी चाहिये।

उपयुक्त राज्य का:—छै. अंक के धारक को निम्न अक्षर से प्रारम्भ राज्य की लाटरी लेवें।

प्रथम वर्ग.—एफ., ओ., वाई.

दूसरा वर्ग:—सी., एस., वी.

तीसरी वर्ग:—आई., एस.

इस प्रकार लाटरी का वर्ग अक्षर सी, एल, वी, एल, ओ, वाई अथवा आई. एस. में से एक होना चाहिये और उनका सम्मलितअंक ६ होन चाहिये। इस अंक के व्यक्तियों को सबसे पूर्व तो आपने आपमें खर्च का संयम रखना है। खर्च का

संयम न रखने के कारण उनके ढेरों कार्य असफलता के कगार में जाकर फंस जाते हैं और वे निरन्तर अर्थ अभाव के संकट में फंसे रहते हैं :

इसलिये:—

○सावधान रहिये ।

○सचेत रहिये ।

○संयमित रहिये ।

○ठीक है, विलासता और सौंदर्य आपके जीवन का अंग है । क्योंकि आप पर शुक्र की छाया है । इसी कारण आपमें काम वासना भी अधिक है और आप उसके कुप्रभावों से भी नहीं बच सकते । फिर भी प्रयास तो कीजिये ।

सहयोग, सहानुभूति और सहायता का प्रतीक अंक

सात

जल देवता वाला (नैपधूत) की छाया में जन्मे सात अंक के व्यक्ति इस संसार में मानवीय दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य करने आते हैं और उनमें सहयोग, सहनशीलता, सहानुभूति कूट कूट कर भरी होती है । उनका समस्त जीवन साहस, गति और निरन्तर सफाई को समर्पित है तभी तो इस भूलोक में निम्न प्रकार के व्यक्ति जन्मे है और जनम लेते रहेंगे ।

कवि : विलियम वर्डसवर्थ

कवि : ब्राउनिंग

कवि : रवीन्द्र नाथ टैगोर

फिल्म अभिनेत्री—हेमा मालिनी

अटल बिहारी वाजपेयी : जनसंघ नेता

उपन्यासकार ओमप्रकाश शर्मा

स्व० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

आई. एस. जौहर

इन सबक जीवन का एक मूल मंत्र है और वह हर हाल में खुश। हर स्थिति में सन्तोष और हर स्थिति, दुखद हो या सुखद उसके प्रति अपना दृष्टिकोण। तभी तो विश्वमति रवीन्द्र नाथ विश्व बंध हो गये। बहुत कम शिक्षा हो या बहुत अधिक ये व्यक्ति अपनी गरिमा को कभी विलुप्त नहीं देते। इनकी कुछ विशेषतायें हैं:—

○यशस्वी और भाग्यशाली।

○धारक के भाग्य से निकटतम लोगों की भाग्य सिद्धि।

○विशाल परिचय क्षेत्र।

○उदार हृदय।

○वास्तविक मानवीय गुणों से सम्पन्न।

○शीघ्र, तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता !

○भविष्य में क्या होने वाला है इसका सुन्दर ढ़ंग से पता लगा लेने की अपूर्व क्षमता। अर्थात् दूरदर्शी !

○समय का पालन करने की क्षमता।

○मित्रों से सहयोग, कम से कम एक दो अथवा अधिक भी ऐसे मित्र होंगे जिनके कारण बचपन से लाभ उठाते रहेंगे और वह बचपन से ही इस अंक के धारक पर तन मन सभी कुछ न्योछावर करने की क्षमता।

○साहसी।

○परिश्रमी।

अवगुण :—

○दूसरों के परोपकार में अधिक भावुकता का उपयोग

करना !

○पानी से खतरा ।

○शारीरिक श्रम करने के कारण कई रोगों का हो जाना, जिनसे पेट में उदरशूल, गैस आदि का निरन्तर बनते रहना । यह रोग चैन नहीं लेने देंगे ।

○प्यार के मामले में असफलता !

○प्रकृति से दूर रहने पर मानसिक उदासीन और एकाकी जीवन से परेशान होने के योग भी आते रहते हैं ।

रोग :—

आमतौर से '७' अंक के धारक व्यक्तियों को निम्न रोगों से खतरा रहता है :—

—कफ । खांसी । रुधिर, विवाका, पसीना, रक्त चाप, मधुमेह आदि के कारण समय के साथ अर्थात् जैसे जैसे आयु बढ़ती है रोग बढ़ते जाते हैं और निम्न रोग तो सदैव हो लगे रहते हैं :—

—अधिक पसीना ।

—पसीने की गन्ध ।

—आमाशय में गड़बड़ । मंदाग्निनी ।

—वायु का प्रकोप ।

—समय समय पर कमजोरी ।

सात मूलांक व्यक्तियों के लिये एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इनकी निर्बल समय में भी कोई विशेष हानि नहीं होगी, जबकि लाभ निरन्तर होता रहेगा और यह लाभ इन मासों में कुछ कम होगा :—

१. जनवरी	२. फरवरी
३. जुलाई	४. अगस्त

जबकि जून, दिसम्बर, सितम्बर मास में यश वृद्धि के आसार

योग कहते हैं और उनका उपयोग करना इनका महत्वपूर्ण यश वृद्धि का साधन बनता है। अतः उपरोक्त मासों में निम्न तिथियां अधिक महत्वपूर्ण हैं :—

प्रथम वर्ग १ = ७
२ = १६
३ = २५.

द्वितीय वर्ग ४ = १
५ = १०
६ = १६
७ = २८

ये तिथियां उस वक्त और भी महत्वपूर्ण होती हैं जब ये क्रमशः इन वारों पर पड़े :—

१ = रविवार
२ = सोमवार
३ = बुद्धवार.

'वरुण' देवता को जल देवता माना गया और इसको अंग्रेजी में नैप्यून का नाम दिया गया है। इसके विषय में अतिरिक्त जानकारी इस प्रकार है :—

राशि स्वामी—मीन.

समय : १४ वर्ष

स्थान : जल

सौर मंडल से दूरी : २७७ करोड़ मील।

आकार : पृथ्वी से ८३ गुना।

अवधि राशि चक्र भ्रमण : १६८ वर्ष।

प्रभाव :—

चर : क्षीण पाचन शक्ति।

स्थिर : आमाशय, अन्तडियां और पेट की खराबी।

त्रिस्वभाव : वीर्य शौचिल्य।

देवता : भगवान नृसिंह।

शुभ रत्न : सोने की अंगूठी में उत्तम रंग का, ढाई धारियो वाला लहसनिया रविवार, सोमवार या बुधवार को कनिष्ठा में धारण करना चाहिये ताकि समस्त दुखों का निवारण होना चाहिये। आमतौर से इस अंक के धारक को निम्न परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है :—

○ भौतिक सुखों के कारण उदासीनता, निराशा और उथल पुथल।

○ साहस का लोप ○ स्वास्थ्य चिन्ता

○ धन का मारा जाना ○ निराशा से कई रोग

□ विश्वास घात।

सात अंक के धारकों को

बड़ी-बड़ी जल मय आंखों के धारक वरुण जातकों की महत्वपूर्ण विशेषता है अपना बनाने की क्षमता। इस क्षमता में नारी वर्ग निश्चय ही निम्न व्यक्तिगत विशेषताओं का स्वामी होता है :—

—लज्जा।

—चुम्बन सरीखा आकर्षण।

—सलोना रुप।

इस प्रकार यह आकर्षण पुरूषों के सर पर जादू की तरह बोलता है और बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ता है, मगर स्थिति तब अधिक विपरीत होती है जब यह आकर्षण वरुण के निर्बल होने पर समाप्त प्राय: हो जाती है और उसकी गरिमा समाप्त होकर केवल लांछन भाव रह जाता है। इस प्रकार नारियों के जीवन में कालिख पोतकर वह पुरूष चले जाते हैं। केवल निम्न प्रकार के पुरूषों से अधिकृत सम्बन्ध स्थापित कीजिये :—

•••सामान्य धनी।

•••सामान्य पद वाले।

•••सुन्दर पुरूष। मगर जिनकी सुन्दरता केवल जलमय आंखों पर केन्द्रित होती है।

महत्वकांक्षा, निरन्तर सुख की ओर अग्रसर होना आपका स्वभाव जरुर है मगर इससे महत्वपूर्ण बात तब होती है जब वरूण निर्बल होकर परेशानी का नया आयाम स्थापित कर दें। इसलिये प्रेम प्रसंगों में फस कर अपयश न लेने की सलाह दी जाती है। आमतौर से आप उन व्यक्तियों से सम्बन्ध स्थापित करें जिनका प्रथम अक्षर हो :—

ए	=अमर	=अनीता
जी	=गणपत	=गीता
जे	=जयन्त	=जावित्री
पी	=प्रकाश	=पुनीता
एस	=श्याम	=शांता
वाई	=याद वेन्द्र	=यामिनि।

इसी प्रकार नारी वर्ग का भी जानना चाहिये और कुअवसरों को टालकर सुअवसरों का लाभ उठाइये। सात अंक के व्यक्ति में निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया गया है :—

•••कलाकार

•••आदर्श नारी

•••व्यापारी मस्तिष्क

•••कल्पना शील मस्तिष्क

•••परिवर्तन कारी स्वभाव

और इसमें ढंग का सामंजस्य आपकी भाग्य सिद्धि में योग-दान प्रस्तुत कर सकता है।

••••••

विश्वास और पौरुष का प्रतीक सबल अंक

—८—

[आठ]

मेरे एक परिचित मित्र ने जो फिल्म उद्योग से सम्बन्ध रखता था पूछा, समझ में नहीं आता किसका विश्वास करूं। कितने ही लाख रुपया लगा चुका हूँ। मगर हर जगह अविश्वास की गहरी छाया नाचती है। अब आप ही बतलाइये किसका भरोसा करूं। अच्छा अगर देवानन्द को लूं तो फिल्म बन जायेगी।

देवानन्द २६ सितम्बर को जन्मे देवानन्द के विषय में जो पहला विचार आया है कि इस महत्त्वाकांक्षी स्टार का भूलॉक ८ है और '८' अंक का व्यक्ति विश्वास का व्यक्ति है अगर वह कुछ ठान ले तो निश्चत रूप से उसे पूर्ण करता होगा। 'आठ' अंक के भूलॉक में महज देवानन्द ही नहीं, निम्न और महानुभाव भी पैदा हुए हैं :—

—स्व० राष्ट्रपति डाक्टर जाकिर हुसेन

—धर्मेन्द्र [फिल्म स्टार]

—राजकुमार (" ")

—राजेन्द्रनाथ (" ")

—नन्दा (" ")

—सिम्मी [" "]

—स्व० सी. राजगोपाला चार्य (भूतपूर्व अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल)

—जार्ज वनार्ड शा (प्रसिद्ध प्रख्यात नाटककार)

—चीन के अधिपति माउत्सेतुंग

—अमरीकी राष्ट्रपतिट्रूमेन

इन सभी महान् भात्रों के जीवन में विश्वास सबसे बड़ा अंग होता है। और इस विश्वास का कारण होता है इस अंक का ग्रहपति जो पूरे विश्व में शनि के नाम से जाना जाता है।

रानी, जिन्हें शनैः रचराः अर्थात् धीमी गति से चलने वाला ग्रह कहा जाता है, ज्योतिष शास्त्रों में निम्न विवरण के साथ प्रस्तुत किया जाता है :—

—निस्तेज।

—दस चन्द्रमा अथवा उपग्रहों से घिरा हुआ।

—धुरी की प्रभाण गति—१० घन्टे १४ मिनट।

सूर्य परिक्रमा का समय: दस हजार सात सौ उनसट और चौथाई दिवस अर्थात् लगभग साढ़े २९ वर्ष का समय। व्यास : लगभग ७५, ६०० मील !

अधिमित्र—।

मित्र—वृहष्पति।

सम—चन्द्रमा, मंगल, बुद्ध, शुक्र।

अधिशत्रु : सूर्य।

ध्रुवीय काम: सडसत हजार मील।

दिशा : पश्चिम।

लिंग : नपुसंक।

प्रकृति : वात प्रधान।

प्रभाव :—शारीरिक बल, विभति, ऐश्वर्य, नौकरी व्यापार आदि।

अंक—डी।

इस प्रकार ८ अंक के धारक व्यक्ति में निम्न विशेषतायें हो सकती हैं।—

- ○ जटिलता और संघर्ष भरा जीवन।
- रहस्यमय।
- अर्न्तमुखी।
- और— केवल काम करने में विश्वास।
- गंभीर प्रकृति।
- साहसी।
- आत्म विश्वास के धनी।

इन आठ के धारक के अन्दर मध्य वर्ग के लोग कम पाये जाते हैं। अर्थात् बीच की स्थिति बिल्कुल नहीं होती। या तो आर और यापार। इनके स्वभावगत विशेषताये दो वर्गो में विभक्त हो सकती हैं :—

—शांत।

—सौम्य।

— एकांत प्रिय।

—प्रचार से दूर।

—कोमल।

—मित्रों के मित्र।

—उच्च स्तर के कार्य।

—सबल और सजग व्यक्तित्व। हर हाल में खुश। यह था पहला वर्ग। अब दूसरे वर्ग की चर्चा करें।—

निराशा। कठोर। उदास। संकोची।

इनमें निम्न दोष भी हो सकते हैं।

जीवन सहचर: विशेषतया पत्नी से प्यार दुर्व्यवहार। अगर यह न भी हो तो भी कम से कम '८' अंक के व्यक्ति पत्नी को वह सम्मान नहीं देते जो पत्नी के योग्य सम्मान होता है।

आमतौर से इनका पारिवारिक जीवन एक दबी-ढकी चादर में सहेजा हुआ होता है, जिसमें प्रायः दरार पड़ने की संभावना लगी रहती है।

संकोच से हानि

मित भाषी, कम बोलने वाले 'द अंक के सरलता से घुल-मिल नहीं पाते इन सकारण पहली बार उनका वास्तविक प्रभाव नहीं पड़ता।

आत्म नियंत्रण से हानि

आत्म नियंत्रण तो एक गुण है मगर कभी-कभी आत्म नियंत्रण के स्थान पर मनुष्य अंतर्मुखी हो जाता है और उसमें निम्न अवगुण आ जाते हैं :—

+ मन ही मन कुढ़ना
+ कूप मंडूक होना
+ यात्राओं से घ्रणा करना।
+ चिड़चिड़ाहट और मानसिक अवरोध
+ दूसरों पर अविश्वास
+ शत्रुओं से घबराहट

और इन स्थिति में उनको निम्न कुपरिणाम भी भुगतने पड़ते हैं।

—धन हानि।
—यश हानि।
—अपमान।
—अलगाव।
—उपेक्षा।
—मानसिक संताप।
—हट के कारण पूरे परिवार का नाश।
—अत्यधिक सतंकता रखने के कारण लोग सनकी जैसी

पदवियों से विभूषित करने लगते हैं।

—शक के कारण परिवार में, परिवार से बाहर हर जगह उपेक्षा और अविश्वास। एकाकी और एकरस जीवन।

—अपार चिन्तायें।

—धन लिप्सायें।

—नशे की लत। एकांत में रहने के कारण '८' अंक के नशे और मानसिक मैथुन, गलत कुटैवों की आदत पड़ जाती है :

—भंग।

—कोकीन।

—शराब।

—गांजा।

और इन कारणों से '८' अंक के धारक को निम्न रोगों का सामना करना पड़ता है :—

—गठिया रक्त चाप।

—हृदय रोग।

○ खून की कमी। खून में दोष। खून सम्बन्धी अन्य रोग।

○ मूत्राशय में दोष, पेसाब में जलन, कान नाक का दर्द।

○ ऐंठन।

● झुंझलाहट, खीज मनोबल में कमी!

लेकिन इसका अर्थ महज य नहीं है कि विश्वास के धनी इन व्यक्तियों के जीवन में केवल दुख ही दुख होता है। असल बात तो यह है कि वास्तविक धरातल पर परिश्रम उभरे और शौर्य को मूर्त रूप देने वाले व्यक्ति अपने जीवन में जो शौर्य और विश्वास की धाक बनाता है वह जीवन पर्यन्त तक बनी रहती है। और साथ ही कभी कभी झटके भी लगते रहते हैं। उनकी

स्थिति इस प्रकार से बीतती है कि यदि वे जितने समय के प्रति सचेत रहे तो उनका पूरा जीवन बड़े आनन्द से बीतता है। तभी तो निम्न सिफारिश की जाती है कि अनुकूल समय देखकर अनुकूल रत्न धारण करें :—

अनुकूल तिथियां

१ = ८
२ = १७
३ = १९

शुभ दिन : शनिवार।

अनुकूल रंग

निम्नलिखित रंगों में से कोई एक रंग का प्रयोग अपने रुमाल बिछावन या पर्दे आदि में करें। रंग हैं :—

—काला, बैंगनी, नीला, भूरा।

अशुभ रंग :—

—सफेद, पीला, गुलाबी हरा।

अनुकूल समय : आमतौर से '८' के धारक व्यक्तियों का अनुकूल समय तब होता है जब शनि बलवान होता है। क्योंकि इसमें भी गति बेहद धीमी होती है, फिर निम्न समय अनुकूल ही रहता है :—

२१ सितम्बर से १९ अक्टूबर !

२१ जनवरी से १९ फरवरी तक।

इसके साथ ही निम्न अन्तराल कमजोर समय के रूप में इस प्रकार है :

मास : दिसम्बर।

जनवरी के प्रथम २० दिन।

मार्च, अप्रैल।

इस समय में निम्न कार्य करना चाहिये।

शनि की पंच धातू मूर्ति का पूजन

चाहे शनि हो या नहीं, यदि आप भी '८' अंक के धारक हैं तो आपको शनि की पंच धातू की मूर्ति बनानी चाहिये। शुद्ध घी का दीपक जला कर निम्न मंत्र १०८ बार पढ़ना चाहियें।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय: नमः ॥

नीलम धारण करें

'८' अंक के धारक को पंच धातू की मूर्ति की पूजा के साथ साथ-साथ पंच धातू की अंगूठी के अन्दर सात या पांच रत्ती का नीलम जड़वा कर पहनना चाहिये।

नीलम के विषय में भी पहचान लेना चाहिये वह चिकना, सुडौल और पारदर्शी हो और उसमें से पतली-पतली नीली किरणें निकलती हों! इसके धारण का समय है शनिवार। शनिवार से वृहस्पतवार तक यदि इसके शुभ लक्षण निकलते रहें तो उचित है, वरना इसका त्याग कर दें। बाजार में नीलम इसी शर्त पर मिलता है।

शनिवार का व्रत भी शुभ होगा

शनिवार के दिन व्रत रखना, काला कपड़ा पहन कर और काले रुमाल को साथ रख कर भोग दिया जाये तो शनिवार को जो भोजन करें उसमें काले तिल और गुड़ का समावेश होना आवश्यक है!

जब शनि निर्बल होता है तो आठ के अंक के धारक से भिन्न परेशानियों से गुजरना पड़ता है :—

O आयु क्षय ।

O मृत्यु ।

O चोरी का व्यवसाय अथवा धन हानि ।

O डकैती ।

O दिवाला निकालना ।

O अपमान ।

O जेल यात्रा ।

O राजकोष ।

O पद अवनती ।

O पद त्याग ।

O बाजुओं में दर्द ।

O गठिया का प्रवेश ।

O तस्करी और बलात्कार जैसे घृणित कार्य घिनोने कार्य ।

शनि की कुंडली में दशानुसार फल :

(१) जब शनि लग्न में होता है तो धारक धनवान होता है। और उसमें निम्न दोष होते हैं :—

—कामी, शोकातुर, नेत्र व्याधी से रोगी ।

दूसरे भाव में

(१) सोने के निकट रहने वाला जातक; निष्तेक धनी होता रहता है ।

(२) मन से परेशान ।

(३ मुंह में रोग !

(४) माईकीट व्यु ।

(५) साधुओं को ना पसन्द करने वाला ।

तीसरे स्थान का शनि

—वाचाल।

—भाषण करने में स्याना।

—निरोगी।

—पहलवानी में जोर करने वाला बनता है।

इसके अलावा यह राशि संयोग निरोगी, विद्वान मल्ल कुश्ती में प्रवीण बनता है।

चौथे स्थान का शनि

—पितृ कष्ट।

—बंधन कष्ट।

—कुल हानि।

—बलहीन कमजोर।

—अपयश का भागीदार।

—क्रोधी।

—कपटी।

—धूर्त।

पांचवें स्थान के शनि का योग

—सन्तान अभाव।

—कुंठित बुद्धि।

—नास्तिक।

—मित्र घाती।

—पेट पीड़ा में परेशान।

—भ्रमणशील, घुमक्कड़, विद्वान, आलसी और चंचल बना डालता है।

छटे स्थान के शनि का योग जातक से

—योगी, कवि।

—बलशाली तो बनाता ही है साथ ही उसमें निम्न अवगुण डालता है :—

जाति का द्रोही।

विपरीत और अशुभ आचार विचार वाला।

योगी।

सांस और दमें का रोगी।

जबकि उसे पशुओं खासतौर से गाय, भैंस, घोड़ा, ऊंट, बैल रखने उन्हें पालने का योग प्राप्त होता है।

सातवें स्थान के शनि का योग :—

धनवान।

रोगी स्त्री।

रोगी पुत्र।

लोभी :

क्रोधी, नीच, भ्रमण में मन रखते, आलसी और नारी वश होता है।

आठवें स्थान के शनि का फलित योग

अशुभ !

जातक का हृदय ओछा और मन चिंचित करने वाला होता है।

जातक स्वयं अपने भाइयों की हत्या जैसे षडयन्त्र का भागीदार बनता है। आमतौर से जातक में निम्न विशेषण आ जाते हैं :—

—धूर्तता।

—आलस।

—कामुकता। अपार वासना।

—अपोकथन।

—धन सम्बन्धी फिजूल खर्ची और उदारता प्रकट करने का प्रचार गुण !

नवें स्थान का शनि योग

अशुभ शुभ योग का मिश्रित फल प्रदान करता है। आमतौर से जातक में निम्न विशेषतायें उसमें आ जाती है।

—मधुर, मृदु स्वभाव।

—क्षुद्र और मोटी बुद्धि। गलत और अशोभनीय मजाक के कारण परेशान।

—अपमान सहना।

—माता की बचपन में मृत्यु।

—धर्म भीरू।

—पतले दुबले जिस्म वाला।

ऐसे व्यक्ति आमतौर पर बहुत ही कठोर जीवन बिताते हैं। उनका सारा जीवन इसी प्रकार की कठोरताओं से भरा होता है कि उन्हें लेश मात्र भी सुख नही मिलता। ऐसे व्यक्ति आमतौर पर साधु वृति ग्रहण कर लेते हैं।

दसवें स्थान का शनि योग

—अकाल मृत्यु से माता पिता का विछोह इस जातक की सबसे बड़ी परेशानी होती है। जो अन्नतः नीच कार्यो में लिप्त होकर निरन्तर सुख की ओर बढ़ता है। यह एक समयोग है जिसके कारण जातक निम्न पद प्राप्त कर सकते हैं :—

—नेता।

—जज।

—योगी ।

—कुशल अधिकारी ।

मगर इसके साथ प्रायः जातक पेट रोगों से पीड़ित होकर दुख पाते हैं !

ग्यारहवां शनि योग

जातक में निम्न परिवर्तन लाता है :—

बचपन ! अत्यन्त दुखी, परेशान, माता पिता का बचपन में ही काल गर्वित होना । मृत्यु के सन्निक पिता की समस्त धन राशि का नाश हो जाना ।

ऐसा जातक बड़ा होकर आमतौर से धोखेबाज सन्तानहीन अथवा सन्तानों की ओर से दुखी बनता है । उसमें निम्न विशेषता भी आकर जुड़ जाते हैं :—

—रोग हीन ।

—गुणी ।

—गुणियों का मित्र ।

—वीर ।

—अधिक लम्बी उम्र वाला ।

—क्रोध के वशीभूत रहने वाला ।

लेकिन विद्वान भी । उसमें ढ़ेरो गुण भी आ जाते हैं ।

बारहवें स्थान के शनि का योग :

बारहवें स्थान पर आया शनि का योग जातक की आंखों का छोटा, मन को उज्जड़, और स्वभाव को निलज्ज बना डालता है । उसमें निम्न विशेषतायें आ जाती हैं :—

—अविश्वासी ।

—कटुभाषी·

—दुष्ट स्वभाव वाला

—माता पिता के परिवार विशेषतया मातुल को कष्ट देने वाला होता है।

आमतौर से ८ अंक के व्यक्ति को धन का अभाव जब खलता है तो उसका निराकरण सरलता से नहीं हो पाता। फिर भी इस अंक के धारक को निम्न धारकों से मित्रता का हाथ बढ़ाना चाहिये :—

(१) २ (२) ४
(३) ६ (४) ८
(५) १२ (६) १७
(७) २० (८) २४
(९) २६.

उपरोक्त तिथियों में जन्में जातकों से शादी ब्याह, व्यापार अनुबंध और सम्बन्ध रखने चाहिये। इसके अलावा लोहे जैसे व्यवसाय करने चाहियें तथा अपने आपको लेवर मानकर चलना चाहिये। क्योंकि शनि का स्वभाव सेवा है और उसके निमित जो दान किया जाता है उसमें धर्म या दुवायें भी सम्मिलित होती हैं।

आठ अंक पाकर घबराना इस अंक के धारक का स्वभाव नहीं है मगर इसके बावजूद भी यह हो सकता है कि इस पुस्तक का पाठक आठ अंक से अरूचि करने लगे। ऐसी स्थिति में मेरा नम्र निवेदन यह है कि आप ऐसी स्थिति में घबरायें नहीं। क्योंकि विश्वास का प्रतीक यह अंक भले ही और अंकों की सात्विकता तो प्रदान न करें, मगर यदि अनुकूल समय का उपयोग करें तो निश्चय ही वे संसार के श्रेष्ठतम व्यक्ति बन सकते हैं, और उनमें वे गुण आ सकते हैं जो उन्हें अपार लोक प्रियता प्रदन करवा दें। अतः इस विषय में घबराना या शोक करना उचित नहीं। जो है उसे कबूल कर, उसी को स्वीकार करके

जीवन चलाना ही जीवन का मूर्त स्वर है। और यही है इस नर योनि की उपलब्धि।

आठ अंक के धारकों में निकटतम वर्ष है—१९७६। इसके बाद हर आठ साल बाद यह शुभ अवसर आयेगा। अतः अगले वर्ष होंगे :—

(१) १९७६+८=१९८४.

(२) १९८४+८=१९९२.

(३) १९९२+८=२०००.

(४) २०००+८=२००८.

इनका सद्उपयोग अवश्य करें !

पराक्रम, वीरता और शौर्य का प्रतीक साहस अंक

—नौ—

विश्वास के साक्षात सजग और अतुल साहसी, दृढ़ निश्चयी होने वाले में महानुभाव वास्तव में जीवन के उन अव्यस्थ माप-दण्डों को अधिकार देते हैं जिन्हें मंगल ग्रह की छाया में पनपना होता है। संसार में अधिकांश सूरवीर व्यक्ति अंक के धारक होते हैं अर्थात् या तो वें इन तारीखों को पैदा होते हैं:—

(१ ९ (२) १८ (३ २७

इस तिथियों को हमारे ज्ञान अनुसार लार्ड कर्जन, श्रीमती कनेडी से विवाह करने वाला व्यापारी ओवासिस आदि का जन्म हुआ हैं। मंगल ग्रह के विषय में ज्योतिष शास्त्र का कथन है:—

व्यास : ४२१५ मील।

पृथ्वी से दूरी : तीन करोड़ पचास लाख मील।

वर्ण : लाल।

प्रधान तत्व : अग्नि।

मित्र : शनि।

सम : सूर्य, चन्द्रमा, वृहस्पति।

शत्रु : शुक्र।

महाशत्रु : बुद्ध।

इस अंक के धारक की विशेशतायें हैं:—

○वीर। ○पराक्रमी।

○मर मिटने को प्रस्तुत।

○शीघ्र निर्णय करने वाला।

○हर स्थिति में किसी से भी भिड़ने की इच्छा।

○अत्यन्त उग्र।

○शान्त न रहने के कारण निरन्तर वाद विवाद का कारण।

○झगड़ालू।

○जीवन साथी या तो सदैव रूठा रहेगा और या उससे लड़ाई चलती रहेगी।

○मुकदमे बाजी में व्यस्त जीवन।

○किसी जोखिम भरे संस्थान जैसे फैक्टरी, सेना का महत्व पूर्ण स्थान, पुलिस आदि में नियुक्ति।

○ऐसी नौकरी जिसमें अपार दुर्घटना हो। जैसे बिजली संस्थान, शिकारी जीवन, समुद्र पर समय बीतने का योग।

○हमेशा ही जोखिम का योग।

○निराशामय जीवन। संगठन की अभूत पूर्व शक्ति होने के बावजूद हमेशा परेशान रहने की आदत।

○स्वाभिमानी, मगर शत्रु पक्ष का सदैव सबल रहना अनिवार्य।

○असंतुलित परिवार के कारण दुखी।

मंगल स्वतः निम्न फलों को दायक है:—

लग्न

—लोहे से भय ।

—आग से भय ।

—चिंतित मन ।

—स्त्री से बेवफाई, सन्तान से अपमान ।

—महत्वाकांक्षी । मगर मूर्ख ।

—अविवेकी ।

साथ ही निम्न गुण भी होते हैं:—

क्रूर । साहसी । वचनपालक । मगर इसके बावजूद उनके कार्य कभी भी पूरे नहीं होते । वे आमतौर काम सम्बन्धी रोगों के शिकार रहते हैं ।

दूसरे स्थान

धन के लिये परेशान रहने वाला व्यक्ति सदैव कर्जदार रहता है ।

परिवार से सुख की चाह व्यर्थ । परिवार से दुख ही मिलता है ।

इसके स्थान पर मंगल जातक को कठोर शब्दों का बोलने वाला, मूर्ख और नेत्र रोगी कर डालता है । अलबत्ता ज्यों-ज्यों समय बीतता है वह अपने इर्द-गिर्द मनुष्यों के स्थान पर पशुओं को एकत्र करना प्रारम्भ कर देता है और जीवन प्रर्यन्त चौपायों के बीच अपने दो दाम्पत्य जीवन काट देता है ।

तीसरे स्थान का मंगल

जिस जातक के स्थान पर तीसरे स्थान स्थान मंगल होता है वह नितांत अभाव का शिकार होता है जैसे:—

○रोग । ○धन अभाव ।

○विपत्ति जनक जीवन ।

○मित्रविहीन।
○परिवार से झगड़ा करने वाला।

जब कि वह स्वयं इन गुणों का धारक होता है:—

—साहसी।

—बहादुर।

—तर्कपूर्ण।

चौथे स्थान का मंगल

अकाल मृत्यु मरने वाले व्यक्तियों में से अधिकांश के चौथे स्थान पर मंगल होता है। इन जातकों को मां का सुख अथवा सगे सम्बन्धी लोगों का सुख नहीं मिल पाता। अलबत्ता उनके जीवन में निम्न लोग होते:—

—वाहन, गाड़ी मोटर, इक्के का पर्याप्त सुख।

—लाभदायक नौकरी।

—विदेश यात्रा।

—सन्तान सुख।

पांचवें स्थान का मंगल

आपने कुछ बहुत खाने वाले क्रोधी व्यक्ति देखे होंगे वे सभी पाप कर्म में प्रवृत होते हैं। गुस्से से अधिकांशतया उनका बदन जला जाता है। ऐसे व्यक्ति पतले दुबले। मगर अधिक खूराक वाले व्यक्ति होते हैं।

अनायास ही क्रोध में बहक जाने वाले ये प्राणी क्रोध वश कोई भी पाप करने को प्रस्तुत रहते हैं। इन व्यक्तियों की सन्तानें अधिकांशतया तो गर्भ में ही स्वाहा हो जाती है। अथवा उनकी जन्म होने के तुरन्त बाद मृत्यु हो जाती है। सन्तान सुख से वंचित ये व्यक्ति अस्थिर मनस्थिति के परिचायक होते हैं।

छठे स्थान का मंगल

पशुओं पर अपनी धाक जमाने वाला जातक जिसके ग्रह

छटे स्थान के मंगल से प्रभावित होते हैं वह अधिकांश रूप से अनायास धन प्राप्त करता है। मगर यह धन वह शीघ्र ही खो भी देता हैं। उसके लम्बे चौड़े खर्चे हमेशा उसे परेशान करते रहते हैं। इस जातक की निम्न विशेषतायें होती हैं:—

—गरीव।

—ईर्ष्या वश अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारने वाला।

सातवों स्थान का मंगल

—जीवन साथी की मृत्यु। ऐसे व्यक्ति अपनी पत्नी को तो खो ही देते हैं। फिर उनकी शादी नहीं हो पाती। अगर सातवें स्थान के मंगल की जातक महिला है तो उन्हें अधिकांशतया वैध्वय सरीखा जीवन बिताना पड़ता है। इसके अलावा निम्न विशेषतायें होती हैं:—

—वायू रोग से पीड़ित।

—राज प्रकोप से भयभीत।

—अदालत से मान हानि, सजा।

—अन्धा, अथवा अन्य नेत्र रोग होने का योग।

आठवों स्थान का मंगल

प्रभावपूर्ण अशुभ ग्रह।

धन हानि करने वाला।

जुये सट्टे से धन हारने वाला।

दिवाला निकालने वाला।

शराबी।

अतिव्यसनी।

कारावास में जीवन बिताने वाला।

नवें स्थान का मंगल

प्रभावशाली शुभ ग्रह। ऐसे जातक में निम्न गुण होते हैं :—

—धनी।

—समाज में सम्मान।

—तीक्षण बुद्धि के कारण यश। मगर पाप की छाया सदैव विराजमान रहती है अतः इसमें निम्न दोष भी होते हैं:—

भाई का शत्रु।

अभिमानी।

क्रोध के वशीभूत।

दलबदल नेता।

दसवें स्थान का मंगल

बहुत शुभ भोग। जितने बड़े मिलटरी अधिकारी जो समाज में अपनी धाक बनाते हैं, वे अधिकांशतया दसवे मंगल से प्रभावित होते हैं। उनमें निम्न गुण होते हैं:—

—गुणवान।

—धनवान।

—यशस्वी।

मगर इसके साथ सन्तान का सुख बहुत कम मिल पाता है। और इसलिये ये आमतौर से अपनी सम्पति ट्रस्ट बनाकर छोड़ जाते हैं। इनका जीवन भी बहुत अधिक नहीं होता।

ग्यारहवें स्थान का मंगल

मिले-जुले मिश्रित गुणों से युक्त ग्यारहवे स्थान का मंगल कुछ इस प्रकार के फल देता है:

—स्वस्थ मनोबल।

—साहास।

—क्रोधी।

—'धैर्य वान होने के साथ इन्हें अपने बन्द धन पर बड़ा गर्व होता है जिसके कारण यह अभागा होते हुये भी अपने

आपको भाग्यशाली मानता हैं। पशु व्यापार, शिकार आदि से इनको महत्वपूर्ण ढंग से लाभ होता है।

बारहवें स्थान का मंगल

आपके जीवन में कभी ऐसे व्यक्ति भी आये होंगे जो मजबूर होते हैं और जिन्हें जमाने से अपार शिकायत होती हैं। ऐसे व्यक्तियों को मजबूरन धर्म परिवर्तन करना पड़ता है और निरतंर वे अन्य लोगों से छला जाता है जैसे: चोर, डाकू, ठगी, बेई—मानी आदि। आमतौर से दिल के अच्छे होने पर भी वे अपयश, लांछन आदि का शिकार हो जाते हैं। यह व्यक्ति आमतौर से बारहवें स्थान के मंगल के शिकार होते हैं।

इस प्रकार मंगल का प्रभाव सीधे मन, सन्तान, धन, व्यवसाय और जीवन पर होता है। आमतौर से ऐसे व्यक्ति निम्न रोगों से पीड़ित रहते हैं :—

- दुर्घटना में
- स्त्रियों के कारण मन मुटाव या लड़ाई
- पागलपन
- रक्त विकार
- गंजापन
- कमजोरी

स्त्रियों का नो मूलॉक होने पर निम्न रोग होते हैं :—

—मासिक धर्म में गड़बड़।

—योनि स्रोथ।

—मिर्गी। रक्तस्त्राव।

—पति से विछोह।

संयुक्त प्रकार से रोज—

रक्तचाप।

हृदय दुर्बलता।

अपंगता ।

'६' मूलांक के व्यक्तियों की जिन्दगी में निम्न विशेषण स्वत: लग जाते हैं.—

—उतावलापन ।

—झगड़ालू ।

मारपीट में लोकप्रिय ।

शिकारी । शिकार में कोई भी अंग का अपंग होने का भय ।

● अधिक प्रेम प्रसंग ।

आमतौर से मंगल जैसे चमचमाते अंक के धारक काम देवता का प्रभाव नहीं रोक पाते । अत: इनके कई प्रेम प्रसंग एक के अलावा कई प्रेमी-प्रेमिकाओं का प्रवेश होगा । इसका मन मनस्ताप उनके मन में सदैव बना रहते हैं !

प्रारम्भ से ही '६' अंक के धारक व्यक्ति शराब और नशे का कारण और उसके शिकार बनते हैं । और निरंतर रोग से पीड़ित रहते हैं ।

अनुकूल समय

तिथि:—

१.—६ २.—१८

३.—१७ ४.—३

५.—६ ६.—१५

७.—२१ ८.—२४

६.—३०

अनुकूल दिन,

मंगलवार और शुक्रवार ।

प्रतिकूल समय:—

मास: मार्च, मई, जून, अक्टूबर । नम्बर के उतरार्ध से २०

दिसम्बर तक।

प्रतिकूल तिथि:—

१.—१ २.—१०

३.—१६ ४.—२८

अनुकूल रंग:—लाल ! लाल रंग के कपड़े, रूमाल, बिछावन आदि का उपयोग करने से मनोबल बढ़ा रहेगा।

अनुकूल रत्न: हिमालय की तराइ में उपलब्ध लाल मूंगा शुभ लाभ दायक है। मूंगा चमकदार, चिकना, कोणदार और वजन में भारी होता तथा दूध डालने से लाल झाइयां निकलती है। धूप में यदि रुई के साथ रखें तो उसमें आग लग जाती है। ऐसे महत्वपूर्ण रत्न को चांदी की अगूंठी में जड़ाकर मंगल के दिन बलशाली ग्रह देवता हनुमान जी की पूजा के बाद धारण करने से अपार कष्ट हारक है।

हनुमान जी का पूजन आत्म बल का वर्धक है अत: मंगलवार के दिन प्रात: काल से ही उपवास रखकर सांय पूजन के बाद बगैर नमक के गुड़-घी मिश्रित भोजन करें तथा रात्रि के आकाश में मंगल ग्रह का दर्शन करे।

जन्म तिथि फलित ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है; विशेषतया अंक ज्योतिष में। इसी से वर्ष फल, मास फल और प्रतिदिन का फल। स्वभावगत विशेषतायें पता लगाती हैं। जातक की जन्म तिथि के अनुसार फलित तथ्य इस प्रकार हैं।

पहली तारीख

—दृढ़ सुधा शक्ति।

—स्वाधीन।

कुछ कार्य रूपी, अन्य आदर्शवादी।

कारण जानने को उत्सुक, भावनाओं के प्रति निछावर का भाव। जिद्दी, स्वार्थी, दृढ़ इच्छा शक्ति।

सदैव कुछ कर डालने को प्रस्तुत, मगर सिर्फ दिखावे भर को।

गुण : इस तारीख को जन्मे बालकों में निम्न गुण होते हैं :-

—कलात्मक प्रवृति।

—रचनात्मक प्रवृति।

—आविष्कारक प्रवृति।

दूसरी तारीख

स्वभाव : उदास, परेशान मगर सामाजिकशील, मित्रों में लोकप्रिय।

गरम स्वभाव के। सदैव कुछ न कुछ करने को उद्यत। मगर स्वयं सदैव दुख में जकड़े हुये।

गुण : भाव प्रधान।

भावनाओं का शोषण शीघ्र करने करने वाला। ऐसे व्यक्ति निम्न गुणों से सम्पन्न होते है :—

—काव्य रचना।

—सगीत रचना।

—सुन्दर भाषण।

तारीख तीन

स्वभाव : प्रसन्न चित, मोद प्रवृति, दूसरे के विष में हित करने वाले और तिरतेक विचार धारा बदलने वाला।

गुण : कल्पनाशील।

हिलमिल कर रहने वाला।

हितकारी।

ऐसे व्यक्ति निम्न पेशे में उपयुक्त होते हैं :—

—कमीशन एजेन्ट ।

—दलाली, आढ़त ।

—सेल्स मैन ।

—प्रचारक ।

—भाषण कर्ता, विद्वान, गुणी, शिक्षा ।

तारीख चार

स्वभाव : पारिवारिक व्यक्ति, परिक्षक में रहने वाला और परिवार के लिये मुनीनी करने वाले व्यक्ति आमतौर से चार तारीख को पैदा होते हैं। यह व्यक्ति धार्मिक विचार धाराके तो होते हैं ही साथ ही वे अपने विचार दूसरों पर थोपने से बाज नहीं आते। ऐसे व्यक्ति जीवन पर्यन्त कठोर मेहनत करते हैं। और कभी एकचित होकर नहीं बैठते।

गुण—परिश्रमी।

रूढ़िवादी मगर निरंतर संघर्षरत।

ऐसे व्यक्ति अच्छे दुकानदार बनते हैं। फार्म और खेती का व्यवसाय करते हैं।

उत्पादक होने के कारण यह सोने-चांदी, ताम्बा, धातू लोहे का व्यवसायक करते हैं। हलवाई, गल्ला और एकाउटंस में भी इनकी रूचि हो सकती है !

तारीख पांच

पांच तारीख को जन्मे व्यक्ति मृदुस्वभाव के चंचल प्रकृति वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति निरंतर कोई न कोई काम करते रहते हैं और उनमें निम्न गुण होते हैं।

—मृदुस्वभाव।

—चचंल मन।

—सामाजिक।

—भोजन विद्ध काम करने वाला।

—बहुत से मित्रो वाले।

—सजीले छैला, चंचल।

इस दिन जनमी युवतियां आमतौर चचंल और भाग्यशाली होती हैं, जबकि इस दिन जन्मा पुरूष आमतौर से स्त्री के हाथों खिलौना बनकर परेशान होता रहता है और इस प्रकार पूरी जिन्दगी परेषानी से निपटने को बाध्य होता है।

ऐसे लोग निम्न पेशे अपना सकते हैं :—

—अभिनय।

—लेखन।

—कविता।

—जनसम्पर्क। नेतृत्व।

—सेल्समेंन शिप।

तारीख पांच को निम्न व्यक्ति हमारे इस तथ्य को सिद्ध कर देंगे।

—राजकपूर फिल्म अभिनेता।

—चित्तरजनदास।

—लार्ड लिस्टर।

—ये सभी हसोड़ मृदु स्वभाव, आत्म विश्वास के धनी और व्यक्ति के रुप से इस संसार में निरंतर स्नेह पात्र बने हुये हैं :

छः तारीख

छः तारीख को उत्पन्न निम्न व्यक्तियों से आप परिचित हैं:—

—सर वाल्टर स्काट

—वारेन हैस्टिंगस

—सैक्स मूलकर

—पैरी एडमिरल)

—एस. डी. बर्मन [संगीतकार]

—पृथ्वी राजकपूर।

इन सभी लोगों के जीवन के निम्न गुण तो प्रत्यक्ष हैं :—

—नम्र।

—कठोर चरित्र वान।

—उत्तरादायित्व से भरपूर।

—सामाजिक स्तर सीमित, मगर घनिष्ट।

—भावुक, मगर अपनी भावनायें अपने में ही सीमित रखना।

—सम्मपूर्ण जीवन। अभी दुख न मानना। कभी आवेश में नं आना। मगर जब आवेश में आ जाना तो सरलता से उससे छुटकारा न पाना। योग्यता में भरपूर और योग्य व्यक्तियों को सम्मान प्रदान करना।

—धन के मामले में भाग्यशाली।

बच्चों से प्रेम। मगर बच्चों का प्रेम दुर्लभ।

गुणः—

ऐसे व्यक्ति सदैव महान्कार्य को ही अपने समकथा योग्य और अनुरूप समझते हैं।

सफेद वस्त्रों से प्यार।

अवगुण।

—समाज में रहते हुये भी एकाकी।

—स्त्री जाति के कारण हमेशा परेशानी रहती हैं सावधानी, से जीवन यापन करना ही उचित होगा।

तारीख सात

सात तारीख को जनमे जातक के विषय में कहा गया है कि यह व्यक्ति आमतौर से बहुत ही प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी

होते हैं और हर विषय पर तर्क शक्ति से विचार करके अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर लेते हैं। अन्य लोगों के अच्छे सुझावों को भी ग्रहण न करना इनका एक महत्वपूर्ण कार्य है। ये व्यक्ति उदासीनता के शिकार तो हो सकते हैं, मगर भावनाओं और भावुकता को इनके निकट कहीं भी स्थान नहीं है। इन्हें ठन्डे दिल का व्यक्तित्व कहा जा सकता ! मन से इनका गहरा विश्वास होता है और यात्रा से इनका मन प्रारम्भ भी होता है। आमतौर से ये यात्रा से लाभ भी कमाते हैं। मगर ससार की भौतिक इच्छाओं की चाह इन्हें नहीं होती।

इस प्रकार इनके गुण होते हैं :—

—प्रभावशाली व्यक्तित्व।

—तर्क पूर्ण विवाद।

—एकाग्रता।

—यात्रा से लाभ।

आमतौर सात तारीख को जन्मे जातक उच्च विचारों के धनी होते हैं। भारत और विदेश में जन्में कुछ व्यक्ति विशेष इस प्रकार है :—

○रानी ऐलिजावेथ	(राज महिषी)
○श्याम प्रसाद मुर्खजी	(नेता)
○ब्राउनिंग	(अंग्रेजी कवि)
○वर्ड्स वर्थ	(,, ,,
○रामकृष्ण डालमिया	(उद्योगपति)
○चन्द्रशेखर	(फिल्म कलाकार)
○जितेन्द्र	(,, ,,)
○लीला नायडू	(,, ,,)
○उषा खन्ना	(फिल्म संगीत कार)
○जयप्रकाश शर्मा	(उपन्यासकार)

आठ तारीख

सांसारिक सुख का प्रतीक 'आठ' आत्म विश्वास का प्रतीक है और ऐसे व्यक्ति हैं जो आत्म विश्वास से सारे काम सम्पान कर लेते हैं।

इनके ये गुण होते हैं :—

- दृढ़ इच्छा शक्ति
- धन की अपार उपलब्धि
- आये धन को सही ढंग से निबटाने की शक्ति
- कलात्मक, रचनात्मक और सम्पादक

स्वभाव :—

- व्यक्तिगत स्पर्द्धा के शिकार।
- एकाकी जीवन, निराशाभरा उन्माद
- कठोर अनुशासन के कारण निरन्तर अपनी ही आग में जलते रहना
- गम्भीर स्वभाव, नितान्त भौतिकवादी और अपने पर अधिक से अधिक विश्वास, हट्टी, जिद्दी,,मगर कार्य को भगवान मानने वाले होते हैं, इसका अनुमान आपको इन व्यक्तियों के नाम से ही पता लग जायेगा :—

स्व डाक्टर जाकिर हुसैन	(भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति)
गुरू नानक देव	(सिक्ख धर्म प्रवर्तक)
ट्रूमेन	(अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति)
सी. राज गोपालाचार्य	(भारत के अंतिम गवर्नर जनरल)
धर्मेन्द्र	(फिल्म अभिनेता)
राजेन्द्र कुमार	(„ „)

इन सबका जीवन कितना पराक्रम मय है यह आप सभी जानते हैं।

नौ तारीख

भावुक मगर दृढ इच्छा शक्ति वाले। इनमें कुछ लोग तो शीघ्र ही नाराज हो जाने की आदत से लाचार होते हैं। मगर आमतौर से इनकी विशेषतायें होती हैं :—

—स्वतन्त्रता।

—आत्मा का सम्मान।

—अन्तुर्मुखी स्वभाव।

—पागलों जैसी जिद्द।

—माता पिता, भाई बहन से झगड़ा।

दसवीं तारीख

—दृढ़ इच्छा शक्ति —स्वस्थ जीवन।

—आत्मिक और भौतिक परेशानियों से बचने की क्षमता।

—रचनात्मक प्रतिभा से विभूषित।

—परोपकारी। —मगर यश से वंचित।

आम जनता से यश मगर परिवार के लोगों की उपेक्षा।

ग्यारहवीं तारीख

—व्यवहार में तर्क हीन।

—परेशान होने वाले और अध्यात्म दृष्टि से कमजोर।

—भावुक। —भावुक्ता से परेशानी।

—कमजोर इच्छा शक्ति के कारण सफलता के कगार पर आने पर भी सफलता से परे परे रहते हैं।

—उच्च विचार।

—कलात्मक गुणों से भरपूर।

कुछ व्यक्ति अच्छे भाषण कर्त्ता बनते हैं।

बारहवीं तारीख

तीन तारीख के अनुरूप।

तेरहवीं तारीख

स्वभाव :—

नम्र। जिद्दी।

भावुक। मगर सहानुभूति से भरपूर होने के बावजूद लोगों की सहानुभूति का पात्र नहीं बन सकते। इसके बावजूद ये ऐसे व्यक्ति होते हैं जिन्हें अपने विषय में कुछ भी कहने में सकोच होता है। इस समूह के लोग बनावट से घृणा करते हैं। उन्हें लाग लपेट से तनिक भी लगाव नहा है।

चौदह तारीख

—परिश्रमी। —बात के धनी।

—तर्क शील। —जुए और जोखिम से भरपूर।

—बाहर से उदास और अन्दर से प्रसन्न।

—विद्रोही विचार धारा के।

ऐसे व्यक्ति परिवार से स्नेह करते हैं और अपने परिवार पर जान छिड़कने से बाज नहीं आते। मगर इनका पारिवारिक जीवन नितान्त दुखी होता है और भूखा जीवन सुख दुख के झूले में झूलता रहता है।

पन्द्रह तारीख

देखने में नम्र मगर अन्दर से कठोर इस तारीख के जातक दोहरा जीवन जीते हैं। उनमें निम्न गुण होते हैं :—

—सहानुभूति पूर्ण। —उदार।

—सोमय। —सामाजिक।

किन्तु महत्त्वाकांक्षा से परे। हमेशा दूसरों के लिये अपना

जीवन समर्पित करने वाले ये जातक अक्सर धन के मामले को छोड़कर सुखी नहीं होते।

सोलह तारीख

साधारण मुस्कान से युक्त गम्भीर भाव गम्भीरता से सुलभ मन वाले सरल व्यक्तित्व से भूषित में जातक आमतौर से शीघ्र क्रोध होने वाला स्वभाव रखते हैं। वे न तो कोई निर्णय कर पाते हैं और न अपनी योजना किसी को बतलाते हैं। गुपचुप काम करने वाले ये व्यक्ति मद्धिम, मध्यम और साधारण जीवन जीते हैं। मगर इनका पारिवारिक जीवन बड़ा सौम्य होता है।

सत्रह तारीख

व्यक्तिगत तौर से ये जातक बहुत ही मजबूत, कठोर और अनुशासन प्रिय दिखलाई देते हैं। बहुत ही चतुर निपुण हर निर्णय को सही तेजी से ले लेते हैं। भावना की दृष्टि से सम्पन्न, भावुक, उदार, मनीषी, ज्ञानपिपासु हमेशा नई खोज में व्यस्त रहते हैं। उनका कार्य करीने से होता है।

अठारह तारीख

इस तारीख का जन्मा जातक महापंडित, ज्ञान शक्ति का अपार भंडार और निरंतर ज्ञान की तलाश करने वाला होगा। भावुक होने के कारण परेशानी में फंस सकेगा, परन्तु उसका अध्यात्म ज्ञान बड़ा महान् होगा। तर्क शक्ति में महासबल यह व्यक्तित्व सदैव ही सफाइ के लिये मौन रहने का व्रत निभायेगा। और इसी कारण इस जातक को अक्सर परेशानी का मुंह देखना होगा।

उन्नीस तारीख

उन्नीस तारीख को जन्मे व्यक्ति आमतौर से बड़े ही जटिल व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं। एकाकी जीवन बिता रहे ये दुखी वो रहते हैं ही, साथ ही इनका मन भी निरतर उदास रहता है

और संसार से कटे कटे रहने से इनका सुयोग दुर्योग में बदल जाता है। फिर भी इस दिन अक्सर भाग्यशाली व्यक्तियों का ही जन्म होता है। मगर ऐसे व्यक्ति हर काम में साझेदारी करते हैं और साझेदारी के कारण इनका भाग्य प्रभावित होता रहता है।

बीस तारीख

बीस तारीख को जन्मे जातकों को निरंतर प्यार मिलता रहेगा, मगर इसके बावजूद वे सदैव मन में प्यार की प्यास लिये होंगे। हम कार्य में कुशल, सौभ्य व्यक्तित्व के स्वामी ये व्यक्ति सांसरिक क्षेत्र में अपार सफलता प्राप्त करते हैं। मगर स्वतंत्रता अथवा आन की बात इनके दिमाग में कभी-कभी ही आती है। अतः य आमतौर से जनसम्पर्क से कटे कटे रहते हैं, और जनता के साथ उनका व्यवहार भिन्न सा होता है, नेता जैसा नहीं। आमतौर से ये अपने मन में प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति होते हैं, और भाषण, नेतृत्व आदि झमेलों से अक्सर दूर रहते हैं।

इक्कीस तारीख

बहुत ही उज्जवल मुस्कान के व्यक्तित्वों का जन्म दिन इक्कीस तारीख अपने जातक में निम्न गुण भरता है:—

—सामाजिक ।

—सौम्य ।

—विनोदी ।

—आत्मसम्मान से पूरित व्यक्तित्व ।

मगर इसके साथ ही वे बड़ी संदिग्ध विचारधारा के कमजोर आत्म बल के व्यक्ति होते हैं जो अक्सर कूटनीति से संसार का हर कार्य करने में सक्षम होते हैं। आमतौर से ये अपना व्यवसाय बदलते रहते हैं।

बाइस तारीख

दूसरों की भलाई के लिये समर्पित परोपकारी व्यक्ति सदैव

भावना के संसार में गोता लगाते रहते हैं। कुछ नितांत एकाकी बन जाते हैं। उनका क्षेत्र सीमित हो जाता है और आमतौर से उनके विश्वासनीय मित्रों की संख्या में कटौती होती रहती है। चिन्ताशील और हर बात पर अपनी अड़ लगाने वाले वह व्यक्ति लड़ाई झगड़ों से विचलित नहीं होते।

तेइस तारीख

जातक का फलादेश उनकी कार्य गरिमा की ओर संकेत करता है। वे स्वतंत्रता को प्यार करते रहे और अपनी स्वतंत्रता पर सदैव मरने मिटने को तैयार रहते हैं। उन्हें रस्मों रिवाज से चिड़ होती है और केवल कार्य पर विश्वास करते हैं। उनका सामाजिक क्षेत्र सदैव विस्तृत होता है और बेहद पुराने भागीदार होते हैं।

स्वतंत्रता की गहरी भावना से प्रभावित ये व्यक्ति सदैव महत्पूर्ण इच्छा शक्ति से प्रभावित होकर बड़े से बड़ा जोखिम उठा लेते हैं।

अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करने की इच्छा बलवती होती है और उद्देश्य के लिये बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार रहते हैं।

चौबीस तारीख

एकदम व्यवहारिक जन्मतिथि, जो जातक को हर स्थिति में चौकन्ना कर देती है। ये लोग अध्यात्म गौरव से मंडित होने की बजाय सांसारिक सफलता से प्रभावित होते हैं। इनके हृदय को अक्सर दूसरे के विचारों से चोट लगती है। ये व्यक्ति प्रचार प्रिय होते हैं और अपने छींकने तक का समाचार पत्र में छपवाना उचित समझते हैं।

पच्चीस तारीख

जिद्दी, कलात्मक और रचनात्मक सर्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मगर इसके साथ ही ये अपार दुख, अपमान भी

भोगत हैं। इसके बावजूद इनका गौरवमय व्यक्तित्व सदैव इन्हें रहस्य की गहरी पर्तों में छिपाये रखता है।

जल्दबाज न होने के बावजूद वे अक्सर अपने कार्य में प्रवीण, विचार उत्तेजक प्रवाद्धी भाषणकर्त्ता और सत्य के प्रति उन्मुख होते हैं। वे रहस्यमय ढंग से अपना क्रोध और ईर्ष्या व्यक्त करते हैं।

छब्बीस तारीख

चुस्त, दुरुस्त मगर अक्सर शुभकार्यों से दूर ये जातक अक्सर चिन्ताओं के शिकार रहते हैं। मगर इनकी चिन्तायें उदारता से ओत प्रोत होती है और ये सदैव अपने निकटतम व्यक्तियों से उदारता व्यक्त करते हैं। सीमित, नपीतुली जिन्दगी में सुख अनुभव करने वाले ये व्यक्ति लम्बी चौड़ी बात बनाना पसन्द नहीं करते।

आमतौर इस तारीख के जातक व्यक्ति शीघ्र ब्याह करना पसन्द करते हैं और अपने आपको प्रेम आदि में उलझाये रहते हैं।

सत्ताइस तारीख

आत्मविश्वास का प्रतीक '९' का अंक इन व्यक्तियों में निम्न गुण भरता है:—

—महत्वाकांक्षा।

—भावुकता।

—आधीनता के प्रति विरोध।

—स्वतन्त्रता के लिये लड़ मरने की कटिबद्ध रहना।

इन व्यक्तियों में सामाजिक भावनाओं के प्रति आदर और दूसरों के लिये सर्वस्व समर्पित करने का गुण होता है।

मगर, अपने विचारों द्वारा स्वयं ही पीड़ित होना भी इस तारीख के जातकों की अपनी एक महत्वपूर्ण विशेषतायें हैं।

२८ तारीख

विशेषतायें.—

—सुदृढ़ व्यक्तित्व ।

—दृढ़ इच्छा शक्ति।

—शांत, साधु प्रवृति ।

—अपनी शक्तियों के प्रर्दशन के प्रति उदासीन ।

आमतौर से इन व्यक्तियों के प्रति सहज, संवेदनशील के अलावा परेशान व्यक्तित्व की गलत बना ली जाती है । वे अपनी योजनायें कार्य रूप देते में नहीं हिचकिचाते । इसलिये ऐसे व्यक्ति धनी, उदार और वीर प्रकृति के होते हैं ।

२९ तारीख

उनतीस तारीख को जनमें जातक में निम्न विशेषतायें रहती हैं:—

—स्वतंत्रता प्रिय ।

—कार्य के लिये उन्मुख ।

—भाग्यशाली ।

—हाकिम; उच्चपदाधिकारी ।

मगर इसके साथ ही ऐसे व्यक्तियों का अन्त कठिनाई से भरी स्थिति में होता है और ये सदैव जीवन के प्रति लापरवाह दिखलाई पड़ता है ।

इस दिन जन्मी नारियां कई रूप में जीवित रहती हैं और अपनी जीवन चर्चा में नये–नये परिवेश को शामिल करती हैं ।

३० तारीख

इस दिन जन्मे व्यक्ति के जीवन का सबसे बड़ा भय यह रहता है कि इनका पारिवारिक जीवन बड़ा दुखी रहता है । और

इनके जीवन में ऐसी घटनायें घटती ही रहती हैं जो जीवन की अवधि को घटा दें !

तीस तारीख के जातकों की विशेषतायें निम्न होती है :—

—सौम्य, विश्वासनीय, सुन्दर व्यक्तित्व, अपार क्षमता ।

मगर स्वयं ही इनको दूर से देखने पर ऐसा मालूम होगा जैसे ये नितांत कठोरता का व्यवहार करते हैं। जब कि वास्तव में ये बड़े ही शांत सौम्य और सुन्दर व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं।

आमतौर से ये अपनी कठिनाइयों पर पार पा लेते हैं।

३१ तारीख

इकतीस तारीख को जन्मे व्यक्तियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये उत्पाद स्पष्टता और दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं ! आमतौर से ये लोग उदार, धनी उभरें गौरवता का स्पष्टतम आभास पाते हैं। साथ ही ये अपने निकटतम व्यक्तियों के प्रति उदार रहते हैं।

बाहर के व्यक्तियों के लिये तो ये काफी उदार होते हैं। मगर अपने घर के व्यक्तियों के प्रति इतने ही कठोर और दुखदाई भी होते हैं, इनके अपने गुण हैं :—

—यात्रा से प्रेम, फिजूल खर्ची, प्रदर्शन ।

—दिखावे से हानि। आमतौर से अपनी शक्ति प्रदर्शन करने के लिये ये अपनी ही हानि कर बैठते हैं।

दूसरा खण्ड : फलित योग

अंक योग द्वारा फल सिद्धि, भाग्य सिद्धि को प्राप्त करने के लिये जिन तत्वों का समावेश होता है, वे हैं :—

१. जन्म अंक योग । २. वर्ष अंक योग ।

३. नाम अंक योग । ४. दिनांक अंक योग ।

५. राशि अंक योग। ६. नक्षत्र अंक योग।

७. कुंडली अंक योग।

इस फलित योग के खण्ड में हम विशेषतया जन्म अंक और वर्ण अंक योग की चर्चा करते हुये ग्रहों के शमन तथा उनके लिये उपयुक्त रत्न धारण की चर्चा करेंगे इस प्रकार अंक योग के साथ-साथ पाप ग्रहों के शमन की चर्चा रहेगी; जिनकी अनुक्रमणिका है :—

१. जन्म अंक योग और वर्ष फल।

२. हर मर्ज का इलाज है और हर रोग की दवा है।

३. रत्न धारण के मूल सिद्धान्त।

४. मनुष्य और रत्न।

५. रत्नों द्वारा भाग्य सिद्धि।

इस खण्ड में प्रमुख रूप से भाग्य सिद्धि के सहायक अंकों और उनके सहायक रत्नों की चर्चा की जायेगी। रत्न किसी भी देश की बहुमूल्य निधि होते हैं अतः उनका उपयोग भाग्य सिद्धि के लिये करना शास्त्र सम्मत व्यवस्था है! क्योंकि यह व्यवस्था शास्त्र सम्मत है इसलिये उन सभी विधाओं का पालन करना आवश्यक है।

रत्न धारण करने से पूर्व जन्मांक और वर्ण अंक का ज्ञान होना आवश्यक है।

जन्म अंक योग और वर्ष फल

अंक योग करके आप न केवल वर्ण फल जान सकते हैं, अपितु हर दिन दिन का फलित योग भी आनन्दमय हो सकता है। यह तो आप जानते ही हैं कि हर दिन न तो अच्छा हो सकता है और न बुरा। हर दिन की कुछ न कुछ विशेषता होती है।

मान लीजिये कोई व्यक्ति १७ मार्च १९३३ को होता है तो

उनका अंक हम प्राप्त कर सकते हैं तथा :

७ : ३ : १९३३

७ : ३ : १६

७+३+७

१७

८.

इसको हम मानेंगे जन्मांक। और उसके बाद जो अंक प्राप्त करना होता है उसे कहा जाता है वर्षांक और उसका प्रतिफल हम अगले पृष्ठों में करेंगे। वर्ष फल कौन सा कैसा रहेगा इसके लिये उस वर्ष को लिखें। मान लीजिये यह है १९७४।

१९७४

१+९+७+४

२१

३.

अब इन दोनों को योग दें :—

८+३

११

२.

इस प्रकार यह अंक आया है। अगली पंक्तियों में आप हर अंक का वार्षिक का फलित आदेश इस प्रकार है :—

एक

—परिवर्तन कारी, नयी स्थितियां; सब जो परिवर्तन।

—कुछ अभूत पूर्व जो शुभ होगा, घटेगा।

—आपके मित्रों की संख्या घटेगी। पुराने मित्र राह में छोड़ जायेंगे। और नये मित्र आकर्षित होंगे मगर कम।

—बुरी से बुरी स्थिति के लिये तैयार रहिये। अच्छी और

बुरी दोनों प्रकार की घटनायें घटेंगी। इज्जत भी अति धन भी।

—अगर आप फील्ड वर्क कर रहे हैं तो आपका तबादला कहीं और हो सकता है।

—आप बिसाती की दुकान में लाभ उठा सकेंगे।

—परिवार में स्थिति परिवर्तन होगा।

इन बातों के लिये तैयार रहिये :

बंटवारा, जुदाई, एकाकीपन।

दो

—साझीदार में लाभ होगा।

—भावुकता से हानि होगी।

—नये सम्बन्ध लाभकारी।

—महिलाओं से पुरुषों के सम्बन्ध में पुरुषों को लाभ होगा मगर अपयश भी मिलेगा।

—शान्त वर्ष।

—समस्यायें आमतौर से आयेंगी नहीं, और यदि आयेंगी तो वे अपने आप समाप्त हो जायेंगी।

—महत्व घटता बढ़ता रहेगा।

दो अंक का महत्व स्वीकार करिये। छोटे लोग, खास तौर से मातहत व्यक्तियों, खासतौर से औरतों के प्रभाव में आने से आपको हानि होगी!

तीन

○नये सामाजिक में अभिलाषों से लाभ।

—नये मित्र!

—व्यापार में लाभ, साझेदारी में लाभ।

—भाग्य से महत्वपूर्ण व्यास, लाभ के अनेक अवसर।

—अर्थ लाभ।

—खर्च कम करें। आवश्यक खर्चे से हानि होने की संभावना।

—अपने दायित्व और जिम्मेदारियों को कम न समझें। उनके अधूरे रहने की सम्भावना है।

अधिक काम करने अथवा काम फैलाने से काम के अधूरे रहने की सभावना है।

चार

परिवर्तन से भरपूर वर्ष, इस वर्ष आप परिवर्तन बिन्दू पर पहुंच जायेंगे जहां से आपके जीवन में कई शुभ परिवर्तन होने जरूरी हैं।

जैसे:—

१. नौकरी में परिवर्तन। २. वन परिवर्तन।

३. स्थान परिवर्तन। शादी ब्याह आदि।

व्यापार करने वाले व्यक्तियों को धन हानि अनाभाव और परेशानी का योग पड़ सकता है।

इसके अलावा निम्न समस्याओं पर ध्यान दें:—

—बच्चों के स्वाथ्य की समस्या।

—मित्रों की समस्या।

—सम्पति पर परेशानी।

—उत्तराधिकार में गड़बड।

—पारिवारिक कला।

इस प्रकार इस साल आपको निश्चित रूप से सचेत रहना होगा।

पांच

☐ शुभ वर्ष।

_ सामाजिक सफलतायें।

—स्थिति परिवर्तन।

—नौकरी के व्यक्तियों पर अड़चने।

—तबादले की समस्या।

—जीवन स्तर में परिवर्तन।

—कुछ ऐसे मित्रों से अलगाव का योग, जिनके साथ आपकी काफी घनिष्टता रही है।

अर्थ स्थिति सुदृढ़।

मगर चले मालिक और झगड़े। मुकदमे बाजी भी होगी, मगर इससे आपको लाभ ही होगा !

अब तक जिन लोगों के वास्तविक परिश्रम निकल जाते रहे हैं और जो अभी भी परेशानी के दौर से गुजर रहे हैं, उनके लिये यह वर्ष सफलताओं का वर्ष हो सकता है।

इस वर्ष निम्न मदों से भी लाभ हो सकता है :—

—'सट्टा, जुआ, प्रेम प्रसंग, लाटरी, बोनस, शेयर बाजारी।

ॐ:

…घटनाहीन सामान्य परिवर्तन से दूर का ऐसा वर्ष जिसमें आपका अधिकांश समयतीर्थ स्थान, भगवत भजन, एकाकी में बीतेगा।

उदासीनता, दायित्व और परेशानी आपके इस साल की प्रमुख घटनाओं में से हो सकती है। जिसमें आप परिवार की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेंगे। ऐसे अवसरों पर सामन्यता परिवार में गहरी बीमारी या असमायिक मृत्यु जैसा क्षुब्ध वातावरण हो सकता ! मगर क्योंकि यह उनके पूजा का अंक है अतः यदि आप एकत्रित होकर अध्यात्म की ओर अपने को मोड़ेंगे तो आपको निश्चित रुप से सफलता प्राप्त होगी। ध्यान रखिये:—

कोई भी दुर्घटना हो सकती है।

कोई भी रोग बिगड़ सकता है।

आप स्वयं किसी रोग के शिकार हो सकते हैं। इसलिये—

—स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

—लड़ाई झगड़े से बचे।

—अपने मन को अधिक परेशान न करे।

सात

सात अंक का योग निम्न भविष्य वाणी कर सकता है:—

+ भाग्य में ठहराव की स्थिति की समाप्ति। मगर शुभ। इसलिये आपको भाग्य आजमाते रहना चाहिये।

परिवार में गड़बड़ हो सकती है। अतः धन को देख-भाल कर खर्च करें।

+ अवसरों का लाभ उठाइये।

+ सामाजिक सम्मान से गौरव मिलेगा।

+ जानकारी बढ़ेगी।

+ पत्नी के प्रति ध्यान रहे। वे बीमार पड़ सकती हैं। मानसिक तनाव बढ़ सकता है।

+ आपको निश्चित रुप से अनायास लाभ सिद्धी का योग है अतः सावधानी पूर्वक आप मदों को आजमाइये :

—सट्टा, लाटरी, शेयर, खरीद बेच।

इनमें सबमें उपयुक्त है। लाटरी।

आठ

आठ का अंक धैर्य का अंक कहा जाता है, और धैर्य शील व्यक्तियों को हमेशा कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अतः यह वर्ष कठिनाई से भरपूर धैर्य से लाभ कमाने वाला वर्ष होगा जिसमें आपको निम्न कठिनाइयां आ सकती हैं:—

—परिवर्तन, अड़चन, अधिक काम।

इसके बावजूद आपको निम्न लाभ हो सकते हैं:—

—अधिक व्यापार, अधिक अवसर, सम्बन्धों का विकास,

—अफसरों और वरिष्ठ लोगों का विश्वास प्राप्त ।

—छोटों से सहयोग ।

इसके अलावा निम्न योग और भी हैं :—

—अधिक लाभ, धन प्राप्ति, अधिक खर्च ।

सावधान : इस वर्ष आप सावधानी से बहुत सा पैसा कमा सकते है । मगर यदि आप सावधान न रहे तो आपके अवसर समाप्त हो जायेंगे अतः—

+ मनोरंजन पूर्ण यात्राये इस साल भूल जाइये ।

+ कठिन यात्रायें आपके मनोबल को तोड़ सकती है ।

+ काम में ध्यान न देने से आपको हानि हो सकती है ।

नौ

इस अंक का योग पाने वाले व्यक्ति इस साल दुविधाओं की स्थिति में होंगे । अतः आप इस साल निम्न काम सम्पन्न करवा सकते हैं:—

—साझा और बंटवारा ।

—किसी कार्य का समापन ।

हिसाब किताब का निबटारा ।

जमीन जायदाद के बंटवारे के लिये यह सबसे योग्य साल है । आप इस वर्ष निम्न कार्य शुरू न करें :—

○ कोई नया काम ।

○ कोई परेशानी भरा कार्य ।

○ जटिल तकनीकी कार्य ।

○ यदि इससे पूर्व आप साझे का काम करते आये हैं तो आप साझे से बाज आयें ।

उपरोक्त अंक आपके जन्मों के सालों का खाता खोलते हैं । ऐसा माना जाता है कि जिस प्रकार पूरे वर्ष का चक्र समाप्त

करके नया वर्ष प्रारम्भ होते ही ऋतुयें पुनरावृत्ति की ओर दौड़ती है उसी प्रकार हर साल का चक्र ६ साल बाद सम होता है और उसी प्रकार की दिन चर्या सामने आती है।

अंक	आयु क्रम
१	१, १०, १६, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७८, ८२, ६१
२	२, ११, २०, २६, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४, ८३, ६२
३	३, १२, २१, ३०, ३६, ४८, ५७, ६६, ७५, ८४, ६३
४	४, १३, २२, ३१, ४०, ४६, ५८, ६७, ७६, ८५, ६४
५	५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५६, ६८, ७७, ८६, ६५
६	६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६६, ७६, ८७, ६६
७	७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७०, ७६, ८८, ६७
८	८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८०, ८६, ६८
६	६, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ६०, ६६

हर वर्ष के अंक की कुछ विशेषतायें होती हैं, जो हर साल बढ़ती रहती है। विशेषताओं का विवरण इस प्रकार है :—

अंक—१ (परिवर्तन)

नये काम के लिये शुभ। नयी नौकरी।
स्कूल का दाखला। शादी। इमारत का बनाना।
तबादला। व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन।
मित्रों से अलगाव।
नये मित्रो की मुलाकात।

अंक—२ (साझे का वर्ष)

साझे के काम की शुरूआत।
भावनाओं से लाभ।
दोस्ती में परिवर्तन। मानो घनिष्टता और या एकदम समाप्ति।

अंक—२ (स्थायित्व का वर्ष)

स्थायित्व का वर्ष ।

लाभ स्थिर : प्रतिष्ठा में वृद्धि । खर्चें बढेंगे ।

अधिक धन खर्च करने से परेशान ।

अंक—३ (परिवर्तन का वर्ष)

परिवर्तन । तवपराज्य । चिन्तायें ।

मेहनत के बाद लाभ की सम्भावना कम ।

कठिनाइयां : जैसे : बेकारी, बेरोजगारी, व्यापार में हानि

हर कार्य में कठिनाई ।

धीरे धीरे काम करने की आदत ।

स्वास्थ्य में गड़बड़ ।

क्या करें :—

व्यक्तिगत रुप से अपने आपको सावधान रखने का प्रयास करें । कम खर्ची, अधिक कमाई लक्ष्य रखिये ।

अंक—५ (सावधानी का वर्ष)

अधिक अनुबन्ध । अधिक सम्बन्ध ।

अधिक वार्तायें । बातचीत से परेशानी ।

योग :—

यात्रा । तबादला । शहर परिवर्तन ।

सावधान रहें :—

बेकार की बहस । दलीलें । झगड़े ।

मुकदमे बाजी ।

आमतौर से आपका लाभांक आपको मुकदमे में जिताने का योग प्रदान करता है, मगर इससे आपको अत्यधिक परेशानी का योग भी है ।

अंक—६ (स्वास्थ्य सम्बन्धी)

—बीमारी का योग।

—अधिक जिम्मेदारी। —मैत्री।

—आस्था में श्रद्धा भक्ति, अध्यात्मक की ओर आपका योग,

—शिक्षा सम्बन्ध में विशिष्ट अंक। इसके विषय में यह बात उल्लेखनीय है कि आप शिक्षा सम्बन्धी विषय में अधिक महारत हांसिल कर सकते हैं।

—नये विचार। —शिक्षा। —नयी योजनायें।

—योजनाओं में विस्तार।

अंक—७ (प्रभात अंक)

इस अंक का महत्व पूर्ण उल्लेख इसलिये किया जाता है सात का अंक शिथिलता लाता है। मगर इसका अर्थ यह नहीं है कि आप हर कार्य में शिथिलता दिखलायें। यह अंक आत्मिक बल, आत्मबल और पौरूष का संयम के लिये उल्लेखनीय है।

इसलिये :—

अपना काम समय से करें।

अधिक परिश्रम लाभकारी रहेगा।

अच्छे, अधिक अच्छे अवसरों के लिये सावधान रहें।

वर्ष का अंतिम समय, अंतिम चार मास बड़े ही लाभकारी हैं, उनका लाभ उठाने के लिये अपने में तत्कालीन शक्ति का संयम कर लें।

बीमारी से, खास तौर से लम्बी बीमारी से सावधान रहें।

चमतकारों से भरपूर भाग्यशाली मगर धैर्य अंक आपको नवीन ढंग से कार्य करो ये सहायता करेगा व्यापारी इस अंक के अधिक लाभ के अधिकारी होंगे।

इसके अलावा इस अंक में यदि आपका वर्षांक पड़े तो आपके

भाग्य में निम्न उपलब्धी बढ़ जाती है :—

—भाग्य, प्रभाव, अधिक लाभ के अवसर, चिन्ताओं से छुटकारा।

पिछले वर्ष जिस लाभ का प्रारम्भ हुआ था वह लाभप्रस्तुत होगा और यह सम्भावना है कि आप :-

—अधिक खर्च करें।

—पैसे, रुपये उधार दें दें।

—शेयरस खरीद लें।

मगर आप यदि अगले अंक की ओर गौर करें तो आपको मालूम होगा कि अगला अंक परिवर्तन का अंक है और यह परिवर्तन आपको परेशान कर सकते हैं : अतः आप रुपये पैसे के मामले में सावधान रहें। और अधिक ढंग से भाग्य शाली बनने के लिये आपको निम्न सावधानी बरतनी चाहिये :—

—धन की उत्पादन करें।

—इस अंक में किसी को धन कर्ज न दें !

—भावनाओं में न बहें !

इस प्रकार हमने दो प्रकार से अंकों का अध्ययन किया :—

(१) जन्मांक (२, वर्षांक।

जन्म अंक निकलने की विधि है, पूरी जन्म तिथि को स्पष्ट लिखें :—

तिथि	मास	वर्ष
२३	जून	१६४०
२३	जून	१६४०

२ + ३ + ६ + १ + ६ + ४ + ०

= २५

= ७.

ओर मान लो इस जन्मांक को हम वर्षांक में बदलना चहाते हैं तो इस प्रकार लिखें :—

जन्मांक		वर्ष
७		१९७४.
७		१+९+७+४
७	+	२१
=२८		
=१०		
=१.		

इस प्रकार वर्ष फल का साधारण ज्ञान आप '७' जन्मांक और एक वर्षांक का मिश्रण करके कर सकते हैं।

हर मर्ज का इलाज है
हर रोग की दवा है

आयुर्वेद का एक शास्त्र सम्मत मत है कि प्रकृति हर मनुष्य को स्वस्थ देखना चाहती है। उसी प्रकार जिस प्रकार पानी ढलान की ओर बहता है अथवा सूर्य उष्णता प्रदान करता है इसी प्रकार मनुष्य मात्र जो स्वयं इस बड़े ब्रह्माण्ड का एक भाग है : एक अंश से सदैव अपने कर्मों से अच्छे और बुरे भाग्य को बुलाता है. यह भाग्य का निर्णय करने वाला सबसे बड़ा तत्व है. समय और स्थिति, समय और स्थिति के ज्ञान को ही ज्योतिष की संज्ञा दी जाती है; और इस विद्या को शास्त्रों का नेत्र माना जाता है। अंक योग उसका महत्वपूर्ण अंग है। मगर वह प्रारम्भिक जानने के बिना अधूरा है अतः आपको इसकी जानकारी होनी ही चाहिये।

हमने अभी अभी कहा है कि ज्योतिष विद्या शास्त्रों का नेत्र कहलाती है और यह ऐसी परम आवश्यक विद्या है जिस पर

प्राचीन समय से अध्ययन होता आया है और हमारे मनस्वी संत; विद्वान, शोधक एवं शोधकर्ता उन पर गर्व करते आये हैं। उसका सार संक्षेप में हम इस खण्ड में इस आशय से प्रकाशित कर रहे हैं कि आप अंक योग को सरलता से समझ सकें।

यह बात तो कोई बतलाने की नहीं है कि हम सभी भू-भाग पर रहते हैं वह भू-भाग पृथ्वी नाम के ग्रह के अन्तर्गत आता है जो सौरमडल के परिवार की एक सदस्या होकर सूर्य से आकर्षित होकर लगातार सूर्य की परिक्रमा कर रही है। यह परिक्रमा धरती घूम-घूम कर करती है और इसमें आकर्षण शक्ति भी है। इस आकर्षण शक्ति से प्रभावित होकर सूर्य उसे अपनी ओर खींचता है और पृथ्वी सूर्य से प्राप्त करती है :—

प्रकाश, ताप।

कभी सूर्य का ही एक अंश पृथ्वी थी और वह सूर्य से छिटक कर अलग अस्तित्व में आ गई थी! हमने पहले खण्ड : अंक योग और भाग्य सिद्धि। में आपको बतलाया था कि ग्रह नौ हैं। आइये अब इस भू-मण्डल के विषय में एक विस्तृत जानकारी प्राप्त कर लें। आप यह तो मानते ही हैं कि भारतीय ज्योतिष का अध्ययन आत्म कल्याण और शोध के लिये किया जाता है। अत: इसको सिद्धांतत: दो भागों में बांटा जा सकता है :—

○ गणित ○ फलित।

गणित ज्योतिष के तीन भेद हैं :

—कारण, तन्त्र, सिद्धान्त।

इसी प्रकार फलित ज्योतिष के निम्न भेद स्वीकार किये गये हैं :—

१. जातक :—जिस व्यक्ति के विषय में फलित ज्योतिष का अध्ययन किया जाये।

२. तांत्रिक :—उसके वर्ष भर का फलित ज्योतिष जानने

की विद्या।

३. मुहूर्त, प्रश्न, शकुन।

ग्यारह ग्रह का उल्लेख हमने इस प्रकार किया है :—

☐सूर्य ☐चन्द्रमा ☐मंगल ☐बुद्ध
☐वृहस्पती ☐शुक्र ☐शनि ☐राहू
☐केतू ☐वरुण।

वारूणी !

और मनुष्य क्या है। सच पूछा जाये तो मनुष्य की उत्पत्ति उन यन्त्र तत्वों से होती है, जिन्हें जलवायु अग्नि पृथ्वी और आकाश में संजोते हैं। मनुष्य आमतौर से सृष्टि की हर वस्तु के साथ अपना सम्बन्ध व्यक्त करने के लिये उत्सुकता दिखलाता रहता है। उसके व्यक्तित्व को कई प्रतीक प्रस्तुत किये हैं। जिनका संक्षेप वर्णन इस प्रकार है :—

बाँहरी व्यक्तित्व

ग्रह : प्रथम : वृहषपति। इन बातों पर प्रभाव डालते हैं :— शरीर, सौंदर्य, पौरूष, धर्म, और व्यवस्था।

दूसरा ग्रह मंगल :—

आत्म विश्वास, आत्म दृढ़ता, साहस, इच्छा, आनन्द, इन्द्रिय ज्ञान।

तीसरा ग्रह : चन्द्रमा :

शरीर व मस्तिष्क में होने वाले परिवर्तनों से प्रभावित मन स्थिति अर्थात भावना, भावुकता, लाभ की इच्छा।

अन्दरूणी व्यक्तित्व

१. शुक्र :—

प्रेम, भाई चारा, सफाई, कला, बुद्धि।

२. बुद्ध :—

यादवाशत, तर्क शक्ति, विचारों का आन्दोलन, और विवेक।

३. सूर्य :—

महत्वकांक्षा, उदारता, प्रभूत्व और सद् चाल चलन।

हृदय स्थान

शनि :—

तत्व विवेचन। तत्व चिन्तन। धैर्य। धीर वीर से पूर्ण गम्भीरता और कार्य क्षमता।

इस प्रकार उपरोक्त ग्रह प्रतीक रूप में इस संसार में आये हर मानव पर प्रभाव डालते हैं। वह मानव जो विभिन्न विभिन्न आकृति लेकर इस संसार में आता है। कभी लम्बा, कभी नाटा, कभी छोटा कभी बड़ा। उसकी आकृति की नाप जोख एक विशेष अनुपात से लक्षण प्रदर्शित करती है।

मनुष्य छोटा हो बड़ा, आदर्श व्यक्तित्व वह होता है जिसकी नाप जोख एक आदर्श लम्बाई, मोटाई लिये हुये हो और उसमें एक विशेष अनुपात हो। इस अनुपात को हम नाप जोख का अनुमान कहते हैं जिसे उन्मान भी कहा जा सकता है। 'उन्मान शब्द का प्रयोग सामुद्रिक शास्त्र में ऊंचाई के लिये किया जाता रहा है, मगर कुछ विद्वान इसे नाप जोख की संज्ञा देते आये हैं। और शरीर की नाप जोख का यह क्रम कितना पुराना है, यह कहना सरल नहीं है। एक जमाना था जब नापने के लिये मीटर सैन्टीमीटर न होकर, गज फुट इंच भी न होकर जो पैमाना

का, वह इस प्रकार था :—

लगभग १८ या उन्नीस इंच—एक हाथ

१ हाथ में : २४ अंगुल

१ अंगुल : ८ यव

और इस प्रकार हमारा पूरा चेहरा, आकृति सब अंगुल और हाथ की पैमाइश में नप जाता है। आदर्श आकृति की नाप जोख को महाॠषि समुद्रेश ने इस प्रकार की व्यवस्था की थी :—

एक कान से दूसरे कान तक की लम्बाई :—१९ से २० अंगुल।

गर्दन से लेकर पीछे बालों तक की लम्बाई :—३६ अंगुल

ठोडी से ललाट तक की लम्बाई :—१२ अंगुल

चेहरे की चौड़ाई—एक कान से दूसरे कान तक : १०गुणा १४ अंगुल (सामान्य)

सूच्य आकार)	: १२ गुणा १४
(आयताकार।	: १२ गुणा १२
अन्डाकार	: १० गुणा १२

आकृति के साथ साथ हर मनुष्य अपने ढंग से जीवन जीने की आदत डाल लेता है। कहां सिकन्दर, कहां पुरू और कहां यूनान कहां भभूत, मगर एक दूसरे का जूझना था अतः आमने सामने आ गये। और आज फिर जमाना बदला है। कभी हमारे पूर्वजों ने चार वर्ण और चार आश्रमों की व्यवस्था की थी, पूरी जिन्दगी को चार भाग में बांट कर केवल इसकी व्यवस्था को सोच की व्यवस्था माना था। पहली अवस्था थी पठन पाठन

सीखने सिखाने की ओर परिश्रम करने की। वह अवस्था तो आज भी है। मगर अंग्रेजों के आते आते शिक्षा का अर्थ रह गया था रोजगार, नौकरी, बाबू बनना। मगर आजादी के आने के बाद उसमें पुनः सुधार हुआ है। महत्वाकांक्षी जागी है। यूं आपा धापी भी है। और छोटी मछली बड़ी मछली को खा जाती है, यह भी संसार का नियम है। उस स्थिति में मनुष्य को महत्वाकांक्षी होना ही चाहिये। और महत्वाकांक्षी न होने की स्थिति में उन्हें अपने सौभाग्य और अपभाग्य के विषय में ज्ञान ही लेना चाहिये।

संसार में छोटी मछली बड़ी मछली को खाये अथवा सदा के लिये सफल हो, फिर भी ससार भर में सूर्य का प्रकाश निरन्तर फैलता ही रहता है। नदियां निरन्तर बढ़ती ही रहती है। वर्षा बरसती है तो वह किसी में भेद किये बिना सबको निरन्तर जल दान करती रहती है। जो पुरषार्थ करता है उसे लाभ मिलता ही है। मगर कभी गलत दिशा में किया गया पुरूषार्थ सूर्य की किरणों की आग बना डालता है। नदियां बाढ ले आती हैं और जीवन का सिंचन करने वाले बादल अपने साथ वज्रपात करने वाली बिजलियों को लेकर आते है। इस स्थिति में अनुपयोगी और उपयोगी का बोध होता है। और सामने आता है यह सवाल काश कोई मार्ग प्रदर्शन कर सकता होगा।

रास्ता दिखाने वाले का महत्व कम नहीं होता। फिर यह जिज्ञासा तो हर व्यक्ति के मन में रहती ही है कि कल क्या होना। कौन सा समय किस काम के लिये उपयुक्त है। कब किसी को कौन सा लाभकारी योग मिलेगा यह जानने की

जिज्ञासा तो बहुतों को रही है, रहेगी और है। यह जिज्ञासा शान्त करने को हम फलित विद्या का नाम देते हैं। फलित विद्या के विकास का इतिहास तो पुराना है ही। मनुष्य प्रारम्भ से ही यह जानने का प्रयास करता रहा है कि उसको सहजता से कहां से धन प्राप्त हो सकता है, कहां उसका पराक्रम शत्रुओं को चारों खाने चित्त कर सकता है, इत्यादि।

इन फलित योगों को सम्पन्न कराने में सबसे सहज विद्या है अंक योग। अंक फलित योग के हजारों केसों का अध्ययन करने से पता चलता है यह एक सटीक और सही विद्या है और यह साधारण से ज्ञान से आ भी जाती है। इससे जीवन के बहुत से छदम रहस्यों का पता सरलता से चल जाता है। प्रथम ९ अंक इकाई के अंक माने गये हैं। यही जीवन के महत्वपूर्ण अंक है और इन्हीं अंकों से हमें जीवन की न जाने कैसी कैसी उपलब्धि मिली हैं।

अंक के योग का वर्णन हमने पिछले खन्ड में काफी विस्तार से किया है। मगर संसार में ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं जो अभी भी इसे एक ढकोसला बताने से बाज नहीं आते। उन्हीं से एक नम्र निवेदन है कि क्या वे हर समय एक सा ही महसूस करते हैं। हर समय उनकी एक सी अनुभूति होती है। सम्भवतः नहीं—

तभी तो कभी मनुष्य जरा से भावावेश में किसी भी मनुष्य का क्यों ऐसे व्यक्ति का जिसे वह सबसे अधिक प्यार करता है उसे मौत के घाट भी उतार देता है और कभी यह घोर अपमान भी सह जाता है।

कभी भाग्य हाथ थामें फिरता है और कभी दूर दूर तक पता ही नहीं चलता।

आखिर ऐसा क्यों है ?

एक उदाहरण है ! एक व्यक्ति को लगभग दस व्यक्तियों का कार्य देना था। वह उनसे मुंह छिपाता फिर रहा था। सभी उसे परेशान करना चाहते थे मगर हुआ कुछ और ही।

एक व्यक्ति का आना नहीं हुआ।

दूसरे को वह मिला नहीं।

तीसरा काय व्यस्त होकर आना भूल गया।

चौथा अस्वस्थ हो गया।

पांचवा आलस करने लगा।

छटा आया तो राह में आवश्यक काम पड़ गया।

सातवां व्यक्ति आया तो वह नहीं मिला।

आठवां व्यक्ति उसकी तलाश में कहीं-कहीं मारा फिरने लगा।

नवां व्यक्ति यह सोचकर संतोष कर बैठा कि उससे कुछ प्राप्त तो होगा नहीं व्यर्थ समय नष्ट क्यों किया जाये और दसवां व्यक्ति जब आया तो वह इतने गरिमा वान व्यक्तियो से घिरा हुआ था कि वह उस व्यक्ति से मांगने का साहस भी नहीं कर पाया। इसके बावजूद दूसरा व्यक्ति का इतिहास लें। वह किसी का कर्जदार नहीं था, मगर सबने उसी को किसी न किसी बहाने अपमानित कर डाला।

आखिर ऐसा क्यों होता है।

यह सब भाग संयोगों पर आधारित नहीं हो सकता। एक

ही परिवार में दो व्यक्ति जुदा जुदा भाग्य के स्वामी होते हैं।

इसका कारण कुछ भी हो केवल संयोग नहीं हो सकता। आमतौर से मनुष्य जो कुछ भोगता है उनमें निम्न तत्व शामिल होते हैं:—

☐ संचित कर्म—पुण्य और पाप सभी ?

☐ उसकी सावधानियां।

☐ और अंतत, उसके मन में उठने वाली सात्विक इच्छायें यही कारण है हर व्यक्ति का तांत्रिक बताते हुए उसे विश्वास दिलाया जाता है कि वह इस आने वाले साल की उपलब्धियों के लिये तैयार रहे क्योंकि यह आने वाला साल उन्हें कुछ न कुछ देगा ही क्योंकि:—

☐ जब तक इस संसार में रहने वाले वे यशस्वी जीव हैं, जो इस संसार में कुछ न कुछ करने के लिये आये हैं। जीवन का उद्देश्य ही कुछ करने में विश्वास करता है जातक व्यक्तित्व को बनाइये जिसका निर्माण कर्म के सिद्धांत पर हुआ है।

☐ यह साल चाहे कितना अच्छा हो, यदि जातक अवसरों को खो देंगे तो आपको कुछ विशेष हाथ नहीं लगेगा, मगर यदि ईस साल के ग्रह बहुत टेढ़े है तो आपको बेहद परेशानी आ सकती है।

☐ समझदारी इसी में है कि आप कर्म के सिद्धांत में विश्वास रखें और आत्म विश्वास का महत्व समझें। आत्म विश्वास ही जीवन का मूल स्त्रोत है। उस मूल स्त्रोत को खोइये मत। उसमें और शक्ति पैदा कीजिये।

☐ यह साल जातक का सर्वश्रेष्ट साल हो सकता है यदि

वह उन अवसरों का लाभ उठा सकें जो उसके जीवन में आयें दिन आयेंगे।

☐ तांत्रिक में खाये फल सौभाग्य के क्षणों का लेखा जोखा है और दृढ़ विश्वास है कि जातक उन क्षणों का अधिक से अधिक उपभोग कर सकेंगे।

यह साल आपके लिये:—

—सौभाग्य सूचक भी है और शुभ अवसर लाने वाला भी।

—अवसरों का लाभ उठाकर जातक धनवान भी बन सकते हैं और यश भी कमा सकते हैं।

—दुर्भाग्य के अवसरों से बचकर आप परेशानियों से दामन छुड़ा सकते हैं। परेशानियों से दामन छुड़ाना और शुभ्अवसर की खोज ही भाग्यसिद्धि है। जिसमें बहुत बड़ा योग अंक ज्योतिष का है।

जब किसी जातक की जीवन पर्यंत की भाग्यसिद्धि अंक ज्योतिष के माध्यम से नापी जाती है तो उसमें धन की व्यवस्था हमारे भारतीय समाज व्यवस्था में चार आश्रम की व्यवस्था है। जिनमें महत्वपूर्ण आश्रम है गृहस्थ, गृहस्थ का अर्थ है विचार, सन्तान, धन अर्थ व्यवस्था, धनो पार्जन और अधिक भाग्यसिद्धि की खोज। आज यह व्यवस्था सर्वोपरी व्यवस्था है और असल बात यह है कि इस व्यवस्था के कारण कोई व्यक्ति वानप्रस्थ और सन्यासी नहीं होना चाहता। सभी महत्वकांक्षा के भयंकर दौड़ से गुजर रहे हो तो आपा धापी भी निश्चित है। फिर महत्वाकांक्षा तो जीवन का गुण है उसका अन्यतम प्रसाद है जो भाग्यसिद्धि के साथ में मिलता है वह है महत्वाकांक्षा की पूर्ति। महत्वाकांक्षा की

पूर्ति के लिये आवश्यक है कि जाने:—

—उसकी स्थिति क्या हैं।

—भाग्यसिद्धि कब होगी।

—कौन सा दिन उसका अच्छा बीतेगा।

—वह अपने दिनों को किस प्रकार अच्छा बना लेगा। इसके लिये आवश्यक है सामान्य फलित ज्योतिष का ज्ञान और उसके मूल आधार।

रत्न धारण के मूल सिद्धांत

रत्न मनुष्य में सुख दुख की वृद्धि करते हैं। उनके भाग्य में परिवर्तन लाते हैं, क्यों लाते हैं इसका कारण बतलाते हम एक यूनानी मान्यता का उल्लेख कर रहे हैं अम्बर हमारे संसार का सबसे प्राचीनतम रत्न है और इसके विषय में एक प्रमुख कहावत यह है कि यशस्वी फेरन अर्थात एक यूनानी महापुरुष की जब बिजली गिरने से मृत्यु हो गई तो उनकी बहनें हरडीनस नदी के किनारे रोती रोती आई और वहां इतनी रोई कि वे वृक्षमात्र रह गई। उनके आंसू तो अम्बर के रूप में इस प्रकार सहायक हैं:—

—गठिया रोग।

—दांत निकालने में सहायक।

—हुक्के में लगा देने से छूत की बीमारी न फैसला।

—शराब के प्याले में अम्बर लगा हो तो उसमें पी गई शराब चढ़ती नहीं।

रोम में औरतें अम्बर इस लिये धारण करती हैं कि उनके

पति निरन्तर प्यार करते रहें।

रत्नों में देवी शक्ति का विश्वास इस प्रकार व्यक्त किया जाता रहा है:—

हकीक : स्नेह प्राप्ति आयु वर्धन।

अम्बर : बीमारियों से मुक्ति।

ब्लड स्टोन : साहस वृद्धि। बहते हुए खून का रुक जाना।

मूंगा : दाम्पत्य सुख।

हीरा : शुक्ररत्न, बलवृद्धि, सुख प्रसन्नता और साहस का प्रतीक।

पन्ना : प्रेम में विशेष रूप से लाभकारी और शुभ।

मून स्टोन : समुद्र में प्राण रक्षा में उपयोगी।

उपल : अक्टूबर मास में जन्मे व्यक्तियों के लिये उपयुक्त रत्न।

मोती : शुभ रत्न।

प्रेम वर्धक।

ज्वर की गर्मी और स्वभाव की गर्मी का शमन करने योग्य रत्न।

रूबी (माणिक्य) :—भूत प्रेत का भय।

सुख वर्धक।

उच्च मिलापी।

नीलम :—प्रसन्नता और सुख वर्धक। मगर पाप ग्रह से प्रभावित व्यक्ति का यह विनाश भी कर देता है।

पुखराज :—मित्रता वर्धक करने वाला महत्वपूर्ण अंक

चारित्र पतन को रोकने वाला।

फीरोजा :—संकट समय यात्रा में एक महत्वपूर्ण रत्न।

रत्न धारण के मूल सिद्धान्त है:—

१. जन्म मास के अनुसार रत्न धारण।

२. सूर्य की राशि के अनुसार रत्न धारण की व्यवस्था।

३. हर दिन का रत्न।

४. पाप ग्रह का शमन के लिये रत्न धारण।

मूल सिद्धान्त है कि जो व्यक्ति जिस मास में पैदा हुआ है वह उसी के अनुसार रत्न धारण करे। यह बात निम्न तालिका से और भी समझ में आ जायेगी।

जन्म मास :	रत्न
जनवरी :	तामड़ा पुलक (गारनेट)
फरवरी :	एमी पिस्ट
मार्च :	ब्लड स्टोन
अप्रैल :	हीरा
मई :	पन्ना
जून :	मोती
जुलाई :	माणिक्य
अगस्त :	पैरीडार
सितम्बर :	नीलम
अक्टूबर :	उप रत्न
नवम्बर :	पुखराज
दिसम्बर :	फिरोजा

इसी प्रकार हर दिन का भी एक रत्न हो सकता है, जैसे:—

१. सोमवार—मोती

२. मंगलवार—वल्ड स्टोन

३. बुद्धवार—हकीक

४. वृहषपतिवार—पन्ना

५. शुक्रवार—फिरोजा

६. शनिवार—ग्रोंनिक्स

७. रविवार—मणि

राशि और पत्थर

ज्योतिष से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति इस बात से परिचित हैं कि संसार के सभी व्यक्ति १२ राशियों में विभक्त होते हैं। राशि का अर्थ है ढ़ेर। आकाश में स्थित विशिष्ट नक्षत्र हैं, जिनमें से इनको प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है ये नक्षत्र हैं:—

१. अशिदर्शिनी	२. भरणी
३. कृतिका	४. रोहिणी
५. मृगशीष	६. आर्द्रा
७. पुर्नर्वसु	८. पुष्य
९. आश्लेषा	१०. मघा
११. पूर्वा फाल्गुणी	१२. उत्तरा फाल्गुनी
१३. हस्त	१४. चित्रा
१५. स्वाति	१६. विशाखा
१७. अनुराधा	१८. ज्येष्ठा
१९. मूल	२०. पूर्वाषाढ़ा
२१. उत्तराषाढ़ा	२२. श्रवण
२३. घनिष्ठा	२४. शतभिषा
२५. पूर्व भाद्रप्रद	२६. उत्तरा भाद्र पद
२७. रेवती।	

उपरोक्त भागों का १२ राशियों या बारह ढेर में विभक्त कर दिया जाता है और इस प्रकार बारह राशियां बन जाती हैं :-

१. मेष २. वृष ३. मिथुन ४. कर्क
५. सिंह ६. कन्या ७. तुला ८. वृश्चिक
९. धनु १०. मकर ११. कुम्भ १२. मीन

हर नक्षत्र के चार चरण होते हैं अर्थात् २७ गुणा ४ = १०८ चरण हुये। जो हर राशि पर समान राशि पर विभक्त होकर हर राशि के हिस्से में '९' चरण आते हैं। सूर्य की सामान्य स्थिति के अनुसार सूर्य इन नक्षत्रों से धरती की परिक्रमा पूरी करवाता है और इस स्थिति के अनुसार उसके रत्न धारण की तालिका इस प्रकार है :—

क्रम	राशि	नक्षत्र	समय	रत्न
१	मेष	अश्विनी, भरणी और कृत्तिका पहला चरण	२१ मार्च से २० अप्रेल तक	हीरा
२	वृष	कृत्तिका के तीन चरण, रोहिणी, मृगशीर्ष के दो चरण	२१ अप्रेल से २० मई तक	पन्ना
३	मिथुन	मृगशीर्ष के दो चरण आर्द्रा : पुनर्वसु के तीन चरण	२१ मई से २० जून तक	मोती
४	कर्क	पुनर्वसु का अन्तिम चरण पुष्प और आश्लेषा	२१ जून से २० जुलाई तक	माणिक्य

५	सिंह	मघा : पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी का पहला चरण	२१ जुलाई से २० अगस्त तक	पैरीडार स्मरडो-निक्स
६	कन्या	उत्तरा फाल्गुनी के तीन चरण हस्त चित्रा के दो चरण	२१ अगस्त २० सितम्बर तक	नीलम
७	तुला	चित्रा के दो चरण: स्वाति विशाखा के तीन चरण	२१ सितम्वर से २० अक्टूबर तक	उपरत्न
८	वृश्चिक	विशाखा का अन्तिम चरण अनुराधा ज्येष्ठा	२१ अक्टूवर २० नवम्बर तक	पुखराज
९	धनु	मूल : पूर्वाषाठा का पहला चरण	२१ नवम्बर से २० दिसम्बर तक	फिरोजा
१०	मकर	उत्तराषाढ़ा के तीन चरण श्रवण : धनिष्ठा के दो चरण	२१ दिसबंर से २० जनवरी तक	गारनेट
११	कुंभ	धनिष्ठा के दो चरण : शतभिषा पूर्वभाद्रपद के तीन चरण	२१ जनवरी से २० फरवरी तक	कटैला
१२	मीन	पूर्वाभाद्र पद का एक चरण उत्तरा भाद्र पद के तीन का एक चरण	२१ फरवरी से २० मार्च तक	ब्लड स्टोन

उपरोक्त तालिका के अनुसार धारण मन्त्रों में भी कभी-कभी अवरोध हो जाता है, क्योंकि हर रत्न से निकलने वाली किरणें विशिष्ट भ्रण की किरणों की कम्पन क्षमता से टकराती है। और अच्छे या बुरे फल प्रयात करती है! अतः निमिन्न मत इस सम्बन्ध में कि कौन सा रत्न धारण किया जाये। उनमें से कुछ मत इस प्रकार हैं :—

—ग्रह कुण्डली में पाप ग्रह के दमन के लिये वही रत्न धारण किया जाये।

—कुण्डली में शुभ ग्रह को बलवान करने के लिये वही रत्न धारण किया जाये।

—जो महादशा चल रही हो उसके अनुरूप रत्न धारण किया जाये।

—अंक के अनुसार ग्रह धारण किया जाये।

क्योंकि अंक योग हमारा विषय है अतः हमने हर अंक के बाद उसका रत्न लिख दिया है। मगर रत्न न तो सरलता से उपलब्ध होते हैं और यदि हो भी जायें तो उनका कुफल सरलतम से कोई व्यक्ति सहन नहीं कर सकता अतः रत्न धारण के कुछ मूल सिद्धान्त हैं :—

—रत्न धारण करने से पूर्व निश्चय ही किसी विद्वान से लेना चाहिये। और उसके लिये निम्न कसौटी का होना आवश्यक है :—

○ कुण्डली चक्र।

○ लग्न ग्रह।

○ अंक गणित।

○ महादशा स्वामी।

यह इसलिये भी आवश्यक है कि ग्रह दो भागों में विभक्त हैं जिनमें एक भाग सूर्य के अधिकार में हैं और दूसरा शनि के रूप। इस प्रकार यह वर्गीकरण इस प्रकार है :—

प्रथम वर्ग

नेतृत्वः सूर्य।

सहयोगी ग्रह

चन्द्र, बृहस्पति, मंगल।

दूसरा ग्रह : शनि ग्रह।

नेतृत्व : शनि।

सहयोगी ग्रह :

बुद्ध, शुक्र, राहू, केतू।

ग्रहों के रत्न इस प्रकार हैं—

सूर्य : माणिक्य, गारनेट, सूर्य मणी आदि।

विरोधी रत्न हीरा, नीलम गोमेद, लहसुनिया आदि।

चन्द्र : मोती।

विरोधी रत्न : हीरा, पन्ना, नीलम गोमेद।

मंगल : मूंगा।

विरोधी रत्न : पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद।

बुद्ध : पन्ना उप रत्न : हरी कंठ फिरोजा आदि।

विरोधी रत्न : मोती : मूंगा।

बृहस्पति : पुखराज।

विरोधी रत्न : हीरा, नीलम, गोमेद।

शुक्र : हीरा ! उपरत्न : सफेद पुखराज, चिरकान आदि।

विरोधी रत्न : मोती, मूंगा, पीला पुखराज।

शनि : नीलम ।

उपरत्न : नीला जरकान, नीला तामड़ा !

विरोधी रत्न :—

माणिक्य, मोती, मूंगा, पीला पुखराज ।

राहू : गोमेद !

उपरत्न : हकीक ।

विरोधी रत्न : माणिक्य, मूंगा, मोती ।

केतू : लहसुनिया !

विरोधी रत्न : मोती, मूंगा, माणिक्य ।

जन्म तिथि अनुसार रत्न

तिथि	अंक	स्वामी	रत्न
१, १०, १९, २८,	१	सूर्य	माणिक्य
२, ११, २०, २९,	२	चन्द्रमा	मोती
३, १२, २१, ३०,	३	वृहस्पति	पुखराज पीला
४, १३, २२, ३१,	४	यूरेनस	गोमेद
५, १४, २३,	५	बुद्ध	पन्ना
६, १५, २४,	६	शुक्र	हीरा
७, १६, २५,	७	नैयून	लहसुनिया
८, १७, २६,	८	शनि	नीलम
९, १८, २७,	९	मंगल	मूंगा

रत्नों द्वारा भाग्य सिद्धि

संसार के हर भाग में रत्नों के प्रति आकर्षण कहा है और स्त्री हो पुरुष सभी ने अपनी शोभा वृद्धि के लिये, वैभव प्रदर्शन

एवं भाग्य सिद्धि के लिये इसे माध्यम बनाया है। यूं तो रत्नों की संख्या बहुत है, मगर भारतीय रत्न पारखियों ने जिन रत्नों को प्रधानता दी है उनकी संख्या चौरासी है। इन चौरासी में ये रत्न का प्रधान रत्न मणिक्य अथवा नव रत्न की सत्ता दी है, जिनके नाम इस प्रकार हैं :—

१. मोती २. प्रवाल (मूंगा) ३. पन्ना
४. पुखराज : पुष्पराज ५. हीरा ६. नीलम
७. गोमेद ८. लहसुनिया ९. रूबी।

इनमें से पांच महा रत्न हैं, जिनके नाम हैं :—

१. माणिक्य (रूबी) २. मोती ३. हीरा
४. नीलम ५. पन्ना।

शेष चार को रत्न की संज्ञा से विभूषित किया जाता है और अन्य जो भी रत्न हैं उन्हें उप रत्न कहा जाता है। अतः केवल नौ रत्न ही नौ ग्रह के धारण योग्य रत्न है। रत्न धारण करते समय कुछ विधियों का पालन करना पड़ता है। रत्न धारण आपके जीवन की महत्वपूर्ण घटना हो सकती है और यह भी सम्भव हो सकता है कि आपका जीवन बदल जाये आपको यथेष्ट भाग्य सिद्धि की प्राप्ति हो। इसलिये निम्नलिखित विधियां सम्पन्न कीजिये :—

—कम से कम वजन : हर रत्न का कम से कम वजन उनकी तालिका में दिया गया है उसी के अनुरूप आप उसे लीजिये।

—रत्न शुद्ध हो।

—दोष रहित हो।

—उपयुक्त धातु की अंगूठी में पहना जाये।

—अंगूठी त्वचा को स्पर्श करें।

—उपयुक्त दिन धारण करें।

—धारण करने से पूर्व अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में स्नान कराके।

—उसकी उपासना करें। उपासना के प्रमुख मंत्र हैं :—

—स्नान, पुष्प अर्पण, चन्दन अर्पण, धूप अर्पण, मंत्र जाप।

—उपयुक्त स्थान पर धारण।

—यथा विधि दान !

—परीक्षण पर यदि खरी न उतरे, लाभदायक न हो तो उसका परित्याग।

बहु विधि धारण करके ही आप यथेष्ठ भाग्य सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं !

पहला रत्न : माणिक्य

रत्न : माणिक्य !

उप रत्न : लालड़ी, लाल तामड़ा, सूर्य मणी या माणिक के रंग का विरकात।

विरोधी रत्न : हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया।

रंग : लाल किरणों युक्त निर्मल, दहक सम्पन्न, लाल कमल की पंखुड़ियों के समान सुन्दर गोल, समान रंग काला दीप्ति मान।

उपयुक्त दिन : रविवार, सोमवार, बृहस्पतिवार।

अंगूठी : सोने की !

मंत्र : ॐ घृणिः सूर्याय नमः।

मंत्र संख्या : सात हजार।

धारण दिन : शुक्ल पक्ष का रविवार। समय : सूर्योदय।

दूसरा रत्न : मोती

रत्न : मोती ।

ग्रह : चन्द्रमा ।

रत्न भार : २, ४, ६, ११ रत्ती ।

उप रत्न ; मून स्टोन । सफेद पुखराज ।

रंग : सफेद में कई रंग ।

भेद : मोती आठ प्रकार का होता है जैसे :—

१. अभ्र युक्ता : बादलों से उत्पन्न । पीली आभा युक्त ।

२. सर्प युक्ता : नील आभा युक्त ।

३. वांस युक्ता : हरी आभा युक्त ।

४. शूकर युक्ता : सूअर के मस्तक से निकलने वाला मोती पीला होता है ।

५. गज युक्ता : हाथी की कनपटी से युक्त आंवले जैसा जामनी ।

६. शंख युक्ता : सफेद रंग का चिकना मोती ।

७. मीन युक्ता : हरा मोतिया रंग काला ।

८. सीप युक्ता : केवल उपलब्ध मोती ।

अंगूठी—चांदी ।

वार : सोमवार, वृहस्पतिवार ।

मंत्र : ओं सों सोमाय नमः ॥

विरोधी रत्न : हीरा, पन्ना, नीलम, गोमेद, वैडूर्य ।

मंत्र संख्या : ११,००० ।

मूंगा

रत्न : मूंगा ।
स्वामी : मंगल ।
अंगूठी : सोना ।
वजन : छः रत्ती ।
वार : मंगलवार ।
अंगुली : अनामिका ।
समय : शुक्लपक्ष के मंगलवार को सूर्योदय से एक घण्टे पूर्व
उप रत्न : संगमूंगी, लाल तामड़ा, लाल जैस्पर, अम्कट ।
विरोधी रत्न : पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद ।
मंत्र : ॐ अं अंगार काय नमः ।
जाप संख्या : दस हजार !

पन्ना

रत्न : पन्ना ।
स्वामी : बुद्ध ।
अंगूठी : चांदी ।
वजन : कम से कम तीन रत्ती ।
अंगुली : दाहिने हाथ की कनिष्ठा ।
मंत्र : ओं वुं वुद्धाय नमः !
उप रत्न : एम्वामेरीत, हरा जिरकान, फिरोजा, पैरीडांर, हकीक ।
विरोधी रंग : मोती और मूंगा ।
जाप संख्या : नौ हजार !

पुखराज

रत्न : पुखराज ।

रंग : पीला ।

स्वामी : ब्रहस्पति ।

अंगूठी : स्वर्ण ।

वजन : सात रत्ती या बारह रत्ती ।

निषेध वजन : ६ रत्ती, ११ रत्ती, १५ रत्ती । तीन रत्ती से कम के पुखराज को धारण करने से लाभ नहीं होगा ।

मंत्र : ॐ वृं वृहस्पतायनमः ।

उपरत्न : पीलामोती । पीला जिरकान ।

विरोधी रत्न : हीरा, नील, गोभेद, वैडूर्य ।

जप संख्या : १९,००० ।

शुभवार : वृहस्पति ।

पक्ष : शुक्लपक्ष ।

समय : सुर्यास्त से एक घंटे पूर्व । अंगूठी तर्जनी उंगली में धारण करें ।

हीरा

रत्न : हीरा ।

स्वामी : शुक्र ।

अंगूठी : चांदी अथवा प्लाटिनम ।

वजन : डेढ़ रत्ती तक ।

उप रत्न : विल्लौर ।

विरोधी रत्न : माणिक्य, मोती, मूंगा, पीला, पुखराज ।

उपयुक्त दिवस : शुक्रवार ।

पक्ष : शुक्ल पक्ष ।

मंत्र : ओं शुं शुक्राय: नमः ।

जप संख्या : १६ हजार ।

उंगली : कनिष्ठा ।

सहायक रत्न : सफेद पुखराज, सफेद जिरकान, सफेद तुरमणी ।

वजन : ६ रत्ती ।

अंगूठी चांदी ।

नीलम

रत्न : नीलम । स्वामी : शनि ।

विशेष : नीलम बाजार में इस शर्त के साथ बिकता है कि यदि अनुकूल सिद्ध न हो तो वापिस कर दिया जाये । इसलिये नीलम की अगूंठी जड़वाने से पूर्व उसकी परीक्षा कर लेनी चाहिये ।

अगूंठी : पंच धातु या स्टील ।

वजन : कम से कम चार रत्ती ।

अनुकूलवार : शनि ।

मंत्र : ओं कां शनैश्यराय: नमः ।

जाप संख्या : २३,००० ।

प्रतिकूल रत्न ; मोती, माणिक्य, पीला, पुखराज, मूंगा ।

उपरत्न : नीला जिरकान, नीला ताकड़ा, कटैला आदि ।

गोमेद

रत्न : गोमेद । स्वामी : राहू ।

अंगूठी : अष्ट धातु ।

अनुकूल दिवस : शनिवार ।

वजन : ६ रत्ती ।

मंत्र : ओं कां राहुवेनम : ।

उपरत्न : हकीक ।

विरोधी रत्न : माणिक, मूंगा, मोती ।

मंत्र संख्या : अठारह हजार ।

विशेष : इसके साथ पीला पुखराज भी न पहने ।

लहसुनिया

रत्न लहसुनिया।
स्वामी : केतू।
अंगूठी : चांदी।
अनुकूलवार : शनि।
समय : अर्द्ध रात्रि।
उप रत्न : दरियाई लहसुनिया।
मंत्र : ओं के केतवे नमः!
जाप सख्या : १७,०००!
रत्न का भार : कम से कम तीन रत्ती।

उपरोक्त जानकारी के बावजूद भी आपको यह परामर्श दिया जाता है कि आप स्वयं कोई रत्न धारण न करके अपने पुरोहित, ज्योतिषी अथवा किसी भी विद्वान से सलाह लें और उन्हीं के अनुरूप कार्य करें।

उपसंहार

अंक योग पर सामान्य ज्ञान प्रदान करने वाली इस पुस्तक को हम इस विश्वास के साथ समाप्त करते हैं कि इसके साथ में पाठक वर्ग को कुछ नई जानकारी और नये भाग्य सिद्धि के उपाय मिलेंगे। ब्रह्म का एक महत्वकांक्षी अंश होने के नाते भाग्य सिद्धि और अच्छा जीवन जीने की लालसा सबका एक मात्र अधिकार हैं। मगर इसके साथ कर्त्तव्य भी जुड़े हैं।

वीर भोग्य वसुन्धरा की, उक्ति आपने सुनी होगी। भाग्य उन्ही का साथ देता है जो विवेक, निष्ठा और कर्त्तव्य से अपना मार्ग प्रशस्त करते हैं। आप उस मार्ग में अपना कर्त्तव्य लगाकर

सोने में सुहागा कर सकते हैं। उसके लिये आवश्यक है :—

- परिश्रम।
- कमाये धन का दान।
- सफाई।
- इमानदारी।
- नैतिकता।

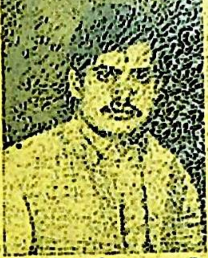
कभी-कभी आपके सारे प्रयत्न होते हुये भी काम में देरी हो सकती है। उस समय घबरायें नहीं! प्रभु का स्मरण करें और एक पत्र मुझे लिखें। प्रयास करूंगा कि आपको शांति और साहस प्रदान कर सकूं। शेष तो प्रभु के हाथ है।

—इति—

लेखक परिचय—

अनेक पुस्तकों के लेखक प्रसिद्धि प्राप्त श्री वेणीराम शास्त्री गौड के द्वितीय पुत्र श्री उमेश शर्मा गौड वेदाचार्य शास्त्रार्थ महा विद्यालय के अध्यापक एवं काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कालर हैं—जो कि अपनी विशेष योग्यता के कारण ही प्रदेश के उच्चतम संस्कृत महा विद्यालय में वेद विभागाध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुये वेद समाज तथा राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं आप शास्त्रीय विषयों पर अनुसंधान पूर्वक लेख पत्र पत्रिकाओं में बराबर लिखा करते हैं—अपनी परम्परानुसार इनमें विलक्षण गाम्भीर्य शाब्द प्रतिभा तथा व्यवहार कोशल एक आदर्श के रूप में देखा जा सकता है। पाठक गण इनके अनुभवों से लाभ ले सकते हैं। इनका पता इस प्रकार है :

पं० उमेश शर्मा गौड वेदाचार्य
डी. ७/१४ सकर कन्द गली
वाराणसी (उ० प्र०)



भारतीय ज्योतिष और अंक योग

ज्योतिषाचार्य श्री उमेश शर्मा वेदाचार्य

साधारण से साधारण पढ़े लिखे व्यक्ति के भाग्य सिद्धि के लिये साधारण जोड़ घटा के गणित से सरल और सहज उपायों से भरपूर श्रेष्ठ ख्याति प्राप्त विद्वान उमेश शर्मा वेदाचार्य की अनूठी कृति, जिससे लाखों करोड़ों लोग लाभ पायेंगे और जान सकेंगे कि उनका भाग्योदय कब होगा और कैसे होगा, आपके लिये आपके भले के लिये